

हरिभूमि रेवाड़ी मूिम

रोहतक, रविवार, 2 नवंबर 2025

तापमान



अधिकतम 30.5 डिग्री
न्यूनतम 15.6 डिग्री

11 अंग्रेजी वक्तव्य कला प्रतियोगिता में कारगिल सदन की कैडेट भावना रही प्रथम

12 हरियाणा म्हारी शान, रेवाड़ी म्हारी जान थीम से मनाया हरियाणा दिवस



खबर संक्षेप

संपत्ति को नुकसान पहुंचाने का आरोपी काबू रेवाड़ी। सिटी पुलिस ने सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने और धमकी देने के मामले में एक नाबालिग को अभिरक्षा में लिया है। पुलिस ने पीड़ित पक्ष की शिकायत के आधार पर 15 अक्टूबर को विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। मामला शहर की एक कॉलोनी से जुड़ा हुआ है, जिसमें एक आरोपी नाबालिग को अभिरक्षा में लिया गया है। बाद में उसे बाल सुधार गृह भेज दिया गया। इस मामले में पहले भी दो आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

दहेज उत्पीड़न मामले में एक आरोपी काबू रेवाड़ी। पुलिस ने दहेज उत्पीड़न के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। विवाहिता की शिकायत के आधार पर पुलिस ने दोनों पक्षों के बीच सुलहनामा कराने के प्रयास किए थे। कई बार काउंसिलिंग करने के बाद भी बातचीत सिरे नहीं चढ़ी तो पुलिस ने 22 मार्च को ससुराल पक्ष के लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया। इस मामले में पुलिस ने राजस्थान के गिंदोवर निवासी रणजीत को गिरफ्तार कर लिया। बाद में उसे पुलिस बेल पर रिहा कर दिया गया।

सड़क हादसे के आरोपी चालक गिरफ्तार रेवाड़ी। पुलिस ने सड़क हादसों के बाद फरार दो वाहन चालकों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने 12 सितंबर को हुए हादसे के बाद फरार वाहन चालक नारायणपुर निवासी गौरव को गिरफ्तार किया है। इस हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। हादसे के बाद दर्ज किए गए मामले में यूपी के बैरानी निवासी मोहम्मद इकबाल को गिरफ्तार किया है। इस हादसे में दो लोग घायल हो गए थे। पुलिस ने आरोपी को जमानत पर छोड़ दिया।

बिजली गुल रहने से ग्रामीण परेशान बावल। क्षेत्र के गांवों में बिजली के अघोषित कटौत ने लोगों को परेशान किया हुआ है। हरचंदपुर निवासी सुरेंद्र, अजीत, विनोद, विक्रम व सुनील आदि ने बताया कि रात के समय गांव में बिजली गुल हो जाती है। इसके बाद घंटों बिजली नहीं आती। गर्मी के मौसम में ग्रामीणों को बिजली के बगल भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों ने निगम अधिकारियों से समस्या के समाधान की मांग की है। लोग कई दिनों से बिजली की समस्या का सामना कर रहे हैं।

शांतिमंग करने के आरोप में गिरफ्तार रेवाड़ी। मॉडल टाउन थाना पुलिस ने शुक्रवार की रात हुड्दंगबाजी करने के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस को सूचना मिली थी कि कुछ लोग गाड़ी के पास खड़े होकर हुड्दंगबाजी कर रहे हैं। इससे लोगों की शांति भंग हो रही है। पुलिस ने मौके पर जाकर वहां मौजूद बुड़ौली निवासी धनराज और प्रवीण को गिरफ्तार कर लिया।

नगर परिषद स्ट्रीट लाइटों की मंटेनेंस पर नहीं दे रही ध्यान

सड़कों पर फिर छाया अंधेरा, आगामी दिनों में स्ट्रीट लाइटें बंद रहने से कोहरा बनेगा आफत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

सर्दी का मौसम शुरू हो चुका है। आगामी दिनों में ठंड के तौर पकड़ने के साथ कोहरा भी दस्तक देना शुरू कर देगा, जिससे शहर की सड़कों पर रात के समय अंधेरा छाया रहने से वाहन चालकों के लिए परेशानी पैदा होने वाली है। नगर परिषद की ओर से दीपावली के समय शहर की स्ट्रीट लाइटें चालू कराई गई थी, लेकिन त्योहार जाने के बाद नप की कार्यशैली फिर से सुस्त पड़ गई है, जिससे स्ट्रीट लाइटें बंद हो जाने से शहर की कई सड़कें रात के समय फिर से अंधेरे में डूब गई हैं। स्ट्रीट लाइटें बंद होने से शहर के कई मार्गों पर रात के समय छाया अंधेरा वाहन चालकों व राहगीरों के लिए परेशानी बना हुआ है।

नगर परिषद की ओर से स्ट्रीट लाइटों के मंटेनेंस का लाखों का ठेका के बाद भी शहर की कई सड़कों पर रात के समय अंधेरा छाया हुआ है। ठेका लेने वाले ठेकेदार की ओर से लाइटों की समय पर मंटेनेंस नहीं की जा रही है। शहर में स्ट्रीट लाइटों के अलावा बिजली पोल पर सौन्दर्यकरण के लिए लगाई गई तिरंगा लाइटें भी बंद पड़ी हुई हैं। शहर के सचिवालय रोड, अनाजमंडी रोड, मेन बाजार, ब्रास मार्केट, गढी बोलनी रोड, बाइपास, मिनी बाइपास व पुराने हाउसिंग बोर्ड रोड पर काफी स्ट्रीट लाइटें बंद पड़ी हुई हैं। यहां तक कि सरकुलर रोड पर बीच-बीच में काफी स्ट्रीट लाइटें खराब हो चुकी हैं। नगर परिषद कार्यालय के बाहर सड़क पर भी रात के समय अंधेरा छाया रहता है।



नगराणा प्रताप चौक से अनाजमंडी रोड पर छाया अंधेरा

सर्दी में बढ़ जाती है चोरी की वारदातें

शहर के कई बाजारों में स्ट्रीट लाइटें नहीं होने के कारण रात के समय अंधेरा रहता है। सर्दी के मौसम में चोरी की वारदात भी काफी बढ़ जाती है। चोरी पर अंकुश लगाने के लिए रात की समय पर्याप्त रोशनी भी जरूरी है ताकि वारदात को अंजाम देने वाले चोरों की सीसीटीवी से पहचान हो सके। शहर के मोती चौक, पुरानी सब्जी मंडी, बारा हजारी रोड, जीवली बाजार, रेलवे रोड, काठमंडी व केवल बाजार सहित कई बाजार में रात के समय अंधेरा छाया रहता है। प्रशासन की ओर से बाजार की स्ट्रीट लाइटें ठीक करने के साथ इनकी संख्या बढ़ाने की भी जरूरत है।

आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद रिमांड पर लिया

लाखों रुपये के जेवरात चोरी करने का आरोपी गिरफ्तार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

धारणा गांव में जुलाई माह में एक सुनार की दुकान से लाखों रुपये के जेवरात चोरी करने के मामले में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद रिमांड पर लिया गया है। पुलिस को दर्ज शिकायत में टांकड़ी निवासी बिजेंद्र सोनी ने बताया था कि उसकी धारणा गांव में सुनार की दुकान है। वह 29 जुलाई को दोहर पर के समय अपने घर खाने खाने के लिए गया हुआ था। इसी दौरान पड़ोसी राहुल ने उसे फोन पर बताया कि उसकी दुकान के बाहर ग्राहक खड़े हुए हैं। इसके बाद वह अपनी दुकान पर आ गया। वहां बाइक लेकर एक महिला और पुरुष खड़े थे। उन्होंने उसकी दुकान से एक जोड़ी चांदी की पाजेब व एक सोने की नाक की बाली लेकर उसे 5200 रुपये दिए। दोनों दुकान से चले गए। उनके जाने के बाद उसने अपना सामान चेक किया तो काउंटर से 68 ग्राम सोने के जेवर गायब मिले।



रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्तार में जेवरात चोरी का आरोपी। फोटो: हरिभूमि

17 सितंबर को केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू हुई थी उसने महिला और पुरुष पर ही चोरी का आरोप लगाते हुए बताया था कि उसने अपने स्तर पर दोनों की तलाश की, लेकिन उनका कोई पता नहीं चल सका। बावल थाना पुलिस ने उसकी शिकायत पर 17 सितंबर को केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू की थी। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में राजस्थान के कैथवाड़ा निवासी दरियाब सिंह उर्फ कालू को गिरफ्तार किया है। पुलिस उसके साथ आई महिला की काबू करने के प्रयास कर रही है।

नांगल मूंदी चौराहे के आसपास ब्लैक स्पोर्ट कार, कई बार हादसों में जा चुकी लोगों की जान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नांगल मूंदी

नांगल मूंदी चौराहे के पास सड़क ब्लैक स्पोर्ट सावित हो रही है। शुक्रवार को दो बार हादसों के अंतराल में इस रोड पर तीन सड़क हादसे हो गए। इनमें एक परिवार के तीन लोगों की जान चली गई, जबकि 10 गंभीर रूप से घायल होकर जिंदगी और मौत के बीच जूझ रहे हैं। ग्रामीण लगातार प्रशासन से चौहारे पर ब्रेकर बनवाने की मांग करते आ रहे हैं, परंतु लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को कोई परवाह नहीं है। ब्रेकर बनवाने की मांग को लेकर शनिवार को चौराहे के पास ही आसपास के गांवों के लोगों की पंचायत हुई, जिसमें कोसली के विधायक अनिल यादव के नाम का ज्ञापन दिया गया। सती मंदिर से कुछ दूरी पर शुक्रवार को एक कार व



रेवाड़ी। शनिवार की रात दुर्घटनाग्रस्त हुई कार, पंचायत में ज्ञापन की प्रति दिखाते ग्रामीण। फोटो: हरिभूमि

बाइक के बीच टक्कर होने से एक परिवार के बुड़ौली निवासी तीन लोगों की मौत हो गई थी। इस हादसे में चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए थे। शुक्रवार की रात एक और कार पेड़ में घुस गई, जबकि दो बाइकों के बीच भिड़ंत हो गई। इन हादसों में 6 लोग घायल हो गए। इन हादसों के बाद नांगल, मूंदी, बुड़ौली व ओलांत सहित कई गांवों लोग शनिवार सुबह बस स्टैंड के पास एकत्रित हुए। सरपंच विजय सिंह ने इस मौके पर कहा कि इस सड़क पर एक के बाद एक कई हादसे हो चुके हैं, जिनमें कई लोगों की जान जा



जुकी

कई बार की जा चुकी शिकायत पंचायत में वक्तव्यों ने कहा कि जब भी इस रोड पर कोई बड़ा हादसा होता है, ग्रामीणों की ओर से प्रशासन को बेकर बनवाने के लिए शिकायत दर्ज कराई जाती है। इसके बावजूद प्रशासन ने इस दिशा में कोई कदम नहीं उठाए हैं। उन्होंने विधायक से इस रोड पर तुरंत ब्रेकर बनवाने की मांग की है, ताकि हादसों पर अंकुश लग सके। पंचायत में शामिल होने वाले लोगों में यशोधर शर्मा, राजेंद्र, सतीश नंबरदार, अतर सिंह, एडवोकेट शोकीन, एडवोकेट सूर्यकांत, उदयराम यादव, अजय कुमार, नरेंद्र कुमार, मास्टर विक्रम व बड़ी संख्या में आसपास के गांवों के लोग मौजूद थे। बाद में ग्रामीणों ने एमएसएल अनिल कुमार को ज्ञापन दिया।

है। नांगल और मूंदी के बीच बने चौराहे के आसपास तीन शिक्षण संस्थान भी हैं। इस चौराहे से तेज गति से वाहन निकलते हैं, जिससे हादसों की आशंका बनी रहती है। बस स्टैंड से लेकर बुड़ौली की ओर काफी दूर तक सड़क के दोनों ओर लगभग 10 फुट गहरे गड्ढे हैं। इस रोड पर अक्सर हादसे होते रहते हैं। पंचायत में शामिल लोगों ने विधायक अनिल कुमार के नाम लिखे ज्ञापन में तुरंत ब्रेकर बनवाने की मांग की है।

जिले के तीन चिकित्सकों को आईएमए हरियाणा में मिला महत्वपूर्ण दायित्व

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

रेवाड़ी के तीन वरिष्ठ चिकित्सकों का चयन आईएमए हरियाणा के महत्वपूर्ण पदों पर किया गया है। जिले से डा. कविता यादव संयुक्त सचिव आईएमए हरियाणा, डा. पवन गोयल को सेंट्रल रिजेंटेंटिव आईएमए हरियाणा व डा. अशोक सैनी को ऑल्टरनेट सेंट्रल रिजेंटेंटिव आईएमए हरियाणा की जिम्मेदारी दी गई है।



डा. कविता, डा. पवन, डा. अशोक

नवनियुक्त पदाधिकारियों ने कहा कि वे समर्पण, निष्ठा और नेतृत्व से चिकित्सा समुदाय की सेवा में नई ऊंचाइयां स्थापित करेंगे। आईएमए के

विवान बने केएलपी कॉलेज एबीवीपी इकाई के अध्यक्ष



रेवाड़ी। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की ओर से शुक्रवार को केएलपी महाविद्यालय इकाई की घोषणा की गई। इकाई अध्यक्ष का दायित्व विवान व इकाई मंत्री का दायित्व अनूप को सौंपा गया। इस मौके पर एबीवीपी ने सतपाल, निखिल, अंकित राजश्री, वंश, प्रिया, मुस्कान, काजल, कुलदीप व प्रयाश सहित 40 विद्यार्थियों को नई इकाई का गठन किया गया है। इस अवसर पर जिला संगठन मंत्री परमिंदर सैनी ने विद्यार्थियों को एबीवीपी की कार्यप्रणाली के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद विद्यार्थियों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण का कार्य करती है। विभाग संयोजक सुशिक्षित धनखंड ने नई इकाई की घोषणा की और कहा की अभाविय युवा शक्ति को सही दिशा में ले जाकर समाज और देश में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य कर रहा है। विभाग प्रमुख व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य डा. दिनेश शर्मा ने सभी नवीन कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर जिला संयोजक तरुण यादव, कंचन व विवेक मौजूद थे।

कुछ दिनों तक मौसम साफ बना रहने की संभावना, दिन के तापमान में वृद्धि होने की संभावना

बिन बरसे लौट गए बदरा, प्रदूषण का संकट बरकरार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

गत चार दिनों से लगातार आसमान में बादल छाए रहे, लेकिन बिना बरसे ही लौट गए। मौसम साफ होना शुरू हो गया है। प्रदूषण का संकट बरकरार है। आसमान में छाया धुआं जमकर परेशान कर रहा है। धारूहेड़ा का एक्वआई तीन दिनों से साइट से गायब है। आने वाले सप्ताह में मौसम आमतौर पर साफ रहने की संभावना जताई जा रही है। शनिवार को सुबह से ही आसमान साफ रहा, परंतु धुएं की चादर ने सूर्य को आगोश में लिए रखा। हवा में नमी का स्तर 57 प्रतिशत रहा। हवा

आसमान में धुएं की चादर छाने से आंखों में जलन और सांस लेने में परेशानी

की गति 8 किलोमीटर प्रति घंटा रही। अधिकतम तापमान 30.5 डिग्री व न्यूनतम तापमान 15.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। बीते चार दिनों से आसमान में बादल छाते रहे,



रेवाड़ी। शनिवार को शहर में छाई प्रदूषण की चादर। फोटो: हरिभूमि

लेकिन संभावना के विपरीत बूंदबांदी तक नहीं हुई। दिन के तापमान में कमी जरूर आ गई थी, जिसके फिर बढ़ने की संभावना बन

आसमान में छाया रहा धुआं

रही है। एक्वआई में कोई सुधार नहीं आ रहा है। आसमान में धुएं की चादर छाने से लोगों को आंखों में जलन की शिकायत हो रही है।

आज हवाओं की रफ्तार बढ़ेगी

मौसम विभाग का अनुमान है कि रविवार को 14 किलोमीटर प्रति घंटा से भी अधिक रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं। हवाओं की गति बढ़ने से प्रदूषण का स्तर काफी हद तक कम हो सकता है। हवा में नमी कम होने से भी एक्वआई में सुधार आ सकता है। हवाएं चलने के बाद धुआं साफ होगा, जिससे सूरज भी चमक भी प्रदूषक कारक तत्वों को वायुमंडल की ऊपरी स्तर तक पहुंचाने का काम करेगा। इस समय मौसम फसलों के लिए अनुकूल बना हुआ है। सरसों की फसल का तेजी से विकास हो रहा है। किसानों ने गेहूं की बिजाई का कार्य भी शुरू कर दिया है।

एक सप्ताह तक बारिश की संभावना नहीं

दमा के मरीजों के लिए घरों से बाहर निकलना भी मुश्किल बना हुआ है। मौसम विभाग के अनुसार अगले कुछ दिनों तक आसमान साफ रह सकता है। लगभग एक सप्ताह तक बारिश की कोई संभावना नहीं है। इस दौरान दिन के तापमान में मामूली वृद्धि दर्ज की जा सकती है।

रेवाड़ी पहुंची रेजांगला शहादत माटी कलश यात्रा

रेजांगला युद्ध स्मारक पर हुआ स्वागत



रेवाड़ी। कलश यात्रा के दल का स्वागत करते शहरवासी। फोटो: हरिभूमि

ये मौजूद रहे इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा की ओर से बिहार के छपरा से शुरू हुई रेजांगला शहादत माटी कलश यात्रा 18 प्रदेशों से होते हुए शनिवार को अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा के राष्ट्रीय महासचिव, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष व यात्रा के प्रदेश संयोजक रमेश राव पायलट के नेतृत्व में रेवाड़ी पहुंची। धारूहेड़ा चुंगी स्थित रेजांगला युद्ध स्मारक पर शहादत माटी कलश का सैकड़ों लोगों ने नमन किया। इस अवसर पर जिले की युद्ध विरांगनाओं व युद्ध वेटेन परिवारों को सम्मानित किया गया। यात्रा संयोजक पायलट ने रेजांगला सहित अहीराला की स्वीर्णिम सैन्य परंपरा का विस्तार एवं वर्णन किया। उन्होंने यात्रा का उद्देश्य और भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। मंच संचालन राव नरेश चौहान राष्ट्रपुत्र ने किया। पूर्व विधायक रणधीर सिंह कापड़ीवास ने सभी का आभार व्यक्त किया। समिति की तरफ से भी यात्री दल को रेजांगला स्मृति चिन्ह और रेजांगला शौर्य गाथा का साहित्य भी भेंट किया गया।

अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा की ओर से बिहार के छपरा से शुरू हुई रेजांगला शहादत माटी कलश यात्रा 18 प्रदेशों से होते हुए शनिवार को अखिल भारतवर्षीय यादव महासभा के राष्ट्रीय महासचिव, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष व यात्रा के प्रदेश संयोजक रमेश राव पायलट के नेतृत्व में रेवाड़ी पहुंची। धारूहेड़ा चुंगी स्थित रेजांगला युद्ध स्मारक पर शहादत माटी कलश का सैकड़ों लोगों ने नमन किया। इस अवसर पर जिले की युद्ध विरांगनाओं व युद्ध वेटेन परिवारों को सम्मानित किया गया। यात्रा संयोजक पायलट ने रेजांगला सहित अहीराला की स्वीर्णिम सैन्य परंपरा का विस्तार एवं वर्णन किया। उन्होंने यात्रा का उद्देश्य और भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला। मंच संचालन राव नरेश चौहान राष्ट्रपुत्र ने किया। पूर्व विधायक रणधीर सिंह कापड़ीवास ने सभी का आभार व्यक्त किया। समिति की तरफ से भी यात्री दल को रेजांगला स्मृति चिन्ह और रेजांगला शौर्य गाथा का साहित्य भी भेंट किया गया।

स्मॉल कैप फंड्स ने 26 फीसदी तक दिया रिटर्न भर दी निवेशकों की झोली

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड्स हमेशा से हाई रिटर्न के लिए जाने जाते रहे हैं। हालांकि इनके रिटर्न पर बाजार से जुड़े उतार-चढ़ाव का असर भी पड़ता है, लेकिन आंकड़े बताते हैं कि लंबी अवधि में पॉजिटिव रिटर्न मिलने की गुंजाइश काफी अधिक रहती है। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) की वेबसाइट पर जिन 13 स्मॉल कैप फंड्स के पिछले 10 साल के आंकड़े मौजूद हैं, उनमें से किसी के भी डायरेक्ट प्लान का सालाना रिटर्न (सीएजीआर) 14% से कम नहीं है। यही नहीं, इनमें से टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स ने लॉन्गम निवेश पर पिछले 10 साल में 19 से 21% फीसदी तक एनुअल रिटर्न दिया है।

एसआईपी पर भी ऊंचा रिटर्न

टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स ने पिछले 10 साल में लॉन्गम के साथ ही साथ रिस्ट्रैटेड इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिये निवेश करने वालों को भी 19% से लेकर 26% तक एनुअलाइज्ड रिटर्न दिए हैं। इस शानदार रिटर्न की बदौलत इन फंड्स ने 1 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश को 10 साल में 7 लाख रुपये तक बना दिया है, जबकि 10 हजार रुपये की एसआईपी से 10 साल में 47.5 लाख रुपये तक का फंड जमा हुआ है।

ये टॉप 5 स्कीम

टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स की लिस्ट में एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड, निपॉन इंडिया म्यूचुअल फंड, एक्सिस म्यूचुअल फंड और क्वांट म्यूचुअल फंड जैसे दिग्गज फंड हाउस की स्कीम शामिल हैं।

लॉन्ग टर्म इनवेस्टमेंट क्यों है बेहतर

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के पिछले आंकड़ों के तमाम विश्लेषण यही बताते हैं कि इनमें लंबी अवधि के लिए निवेश करना बेहतर रहता है। हालांकि ही में आई ऐसी ही एक रिपोर्ट के मुताबिक निप्टी स्मॉल कैप 250 इंडेक्स का 10 साल की एसआईपी का मंथली रोलिंग रिटर्न (एक्सआरआरआर) 99% समय पॉजिटिव रहा है। यानी अगर इक्विटी में निवेश करना हो, तो लॉन्ग टर्म एसआईपी उसका बेहतर तरीका है।

10 साल में बेस्ट रिटर्न देने वाले टॉप फंड

निपॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- लॉन्गम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 21.51 %
- 1 लाख के लॉन्गम की 10 साल में फंड वैल्यू : 7,01,649 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न : 23.96 %
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 42,63,065 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.64 %

क्वांट स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- लॉन्गम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 20.42 %
- 1 लाख के लॉन्गम की 10 साल में फंड वैल्यू : 6,41,189 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न : 25.99 %
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 47,56,696 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.71 %

एक्सिस स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- लॉन्गम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 19.91 %
- 1 लाख के लॉन्गम की 10 साल में फंड वैल्यू : 6,14,545 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न : 21.43 %
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 38,35,386 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.57 %

एचडीएफसी स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- लॉन्गम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 19.54 %
- 1 लाख के लॉन्गम की 10 साल में फंड वैल्यू : 5,95,844 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न : 20.13 %
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 37,17,373 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.68 %

एसबीआई स्मॉल कैप फंड-डायरेक्ट प्लान

- लॉन्गम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 19.44 %
- 1 लाख के लॉन्गम की 10 साल में फंड वैल्यू : 5,90,878 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एनुअलाइज्ड रिटर्न : 20.13 %
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 34,65,264 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.76 %



हाई रिटर्न, हाई रिस्क इनवेस्टमेंट

ऊपर दी गई सभी स्कीम समेत तमाम स्मॉल कैप फंड्स को रिस्कमीटर पर बहुत अधिक रिस्क की रेटिंग दी जाती है। अलग-अलग मार्केट केप पर आधारित म्यूचुअल फंड्स में भी स्मॉल कैप को मिड कैप और लार्ज कैप की तुलना में ज्यादा रिस्क माना जाता है। यानी स्मॉल कैप फंड हाई रिटर्न, हाई रिस्क इनवेस्टमेंट की कैटेगरी में आते हैं। इसके अलावा म्यूचुअल फंड्स में पिछले रिटर्न के आगे भी जारी रहने की कोई गारंटी नहीं होती। इसलिए इनमें निवेश के बारे में कोई फेरफाल करने से पहले अपनी रिस्क लेने की क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए।

क्या है स्मॉल कैप फंड्स

स्मॉल कैप फंड्स एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करता है। इन कंपनियों की मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होती है, लेकिन इनमें उच्च विकास क्षमता होती है। स्मॉल कैप फंड्स की विशेषताएं

- उच्च विकास क्षमता: स्मॉल कैप कंपनियों में उच्च विकास क्षमता होती है, जिससे इनके शेयरों की कीमतें बढ़ सकती हैं।
- जोखिम: स्मॉल कैप फंड्स में जोखिम अधिक होता है, क्योंकि छोटी कंपनियों की वित्तीय स्थिति अस्थिर हो सकती है।
- विविधीकरण: स्मॉल कैप फंड्स में निवेश करने से आपके पोर्टफोलियो में विविधीकरण होता है।
- लंबी अवधि के लिए निवेश: स्मॉल कैप फंड्स में निवेश लंबी अवधि के लिए करना चाहिए, ताकि आप बाजार की अस्थिरता को सहन कर सकें।

स्मॉल कैप फंड्स के लाभ

- उच्च रिटर्न: स्मॉल कैप फंड्स उच्च रिटर्न प्रदान कर सकते हैं।
- विविधीकरण: निवेश करने से आपके पोर्टफोलियो में मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होती है, लेकिन इनमें उच्च विकास क्षमता होती है।
- नई कंपनियों में निवेश: आपको नई व तेजी से बढ़ती कंपनियों में निवेश का अवसर मिलता है।

एसआईपी का दमदार प्रदर्शन 5 म्यूचुअल फंड ने दिया 20% से ज्यादा रिटर्न

279 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 276 ने पॉजिटिव रिटर्न दिया

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों के कमाया बढ़िया मुनाफा

पिछले एक साल में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों को मालामाल कर दिया है। पिछले साल यानी 2024 की दिवाली से लेकर अब तक 279 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 276 फंड्स ने पॉजिटिव रिटर्न दिया। यानी इनमें निवेश करने वाले निवेशकों को मुनाफा हुआ। वहीं, सिर्फ तीन फंड्स ऐसे रहे जिन्होंने निवेशकों को नुकसान पहुंचाया। सबसे खास बात यह है कि 10 ऐसे इक्विटी म्यूचुअल फंड्स हैं जिन्होंने एसआईपी यानी एक तय रकम हर महीने निवेश करने वालों को 20% से भी ज्यादा का सालाना रिटर्न दिया है। पिछली दिवाली से लेकर अब तक एक साल में कई म्यूचुअल फंड ने निवेशकों को जबर्दस्त रिटर्न दिया है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ फंडों के बारे में जो आपको अच्छा मुनाफा दे सकते हैं।

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लाभ

- लार्ज कैप फंड्स: ये फंड्स बड़ी मार्केट कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों में निवेश करते हैं।
- मिड कैप फंड्स: ये फंड्स मध्यम आकार की कंपनियों में निवेश करते हैं।
- स्मॉल कैप फंड्स: ये फंड्स छोटी कंपनियों में निवेश करते हैं।
- मल्टीकैप फंड्स: ये फंड्स विभिन्न मार्केट कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों में निवेश करते हैं।
- फोकस्ड फंड्स: ये फंड्स सीमित संख्या में शेयरों में निवेश करते हैं।
- सेक्टरल फंड्स: ये फंड्स विशिष्ट क्षेत्रों में निवेश करते हैं।

ग्रो मल्टीकैप फंड

इस लिस्ट में सबसे ऊपर ग्रो मल्टीकैप फंड का नाम है। इसने एसआईपी निवेश पर सबसे ज्यादा करीब 26% रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आपने इस फंड में हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी की होती, तो पिछली दिवाली से अब तक आपके निवेश की कीमत लगभग 1.10 लाख रुपये हो जाती। यानी आपके लगाए हुए पैसों से ज्यादा का मुनाफा हुआ।

इन्वेस्टो इंडिया मिडकैप फंड

इन्वेस्टो इंडिया मिडकैप फंड ने भी निवेशकों को अच्छा रिटर्न दिया है। इसने इसी अवधि में 24.69% का शानदार दिया। मिडकैप फंड्स उन कंपनियों में निवेश करते हैं जिनका मार्केट कैप मीडियम होता है यानी वे बहुत बड़ी भी नहीं होतीं और बहुत छोटी भी नहीं।

हेलिऑस लार्ज एंड मिड कैप फंड

हेलिऑस लार्ज एंड मिड कैप फंड और आईसीआईसीआई पू फ्लेक्सिबल फंड ने भी निवेशकों को निराश नहीं किया। इन्होंने क्रमशः 23.82% और 23.22% का एक्सआईआर आर दिया। फ्लेक्सिबल फंड्स की खासियत यह होती है कि फंड मैनेजर किसी भी साइज की कंपनी में निवेश करने के लिए स्वतंत्र होते हैं, चाहे वह लार्ज-कैप हो, मिड-कैप हो या स्मॉल-कैप।

मोतीलाल ओसवाल लार्ज एंड मिडकैप फंड

मोतीलाल ओसवाल लार्ज एंड मिडकैप फंड ने 22.33% का एक्सआईआर आर दिया। इस फंड में अगर किसी ने हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी की होती, तो आज उसके निवेश की कीमत लगभग 1.33 लाख रुपये हो जाती। यह दिखाता है कि एसआईपी के जरिए लंबी अवधि में कैसे अच्छी खासी रकम जमा की जा सकती है।

कोटक फोकस्ड फंड

कोटक फोकस्ड फंड ने भी 22.06% का एक्सआईआर आर दर्ज किया। फोकस्ड फंड्स में फंड मैनेजर कुछ चुनिंदा स्टॉक्स में ही निवेश करते हैं, जिससे उनका फोकस बना रहता है। इनके अलावा मीरा एसेट मिडकैप फंड ने 20.55% का एक्सआईआर आर दिया। इसके बाद आईसीआईसीआई फ्लेक्सिबल म्यूचुअल फंड के दो फंड्स ने भी 20% के आंकड़े को पार किया।

निवेश की ऐसे प्लानिंग करेंगे तो भविष्य में कभी नहीं होगी पैसों की टेंशन

उम्र का हर दशक अपनी अलग-अलग जिम्मेदारियां और मौके लेकर आता है

20 साल की उम्र रिस्क लेने का समय होता है, काम करने की क्षमता अधिक होती

30 साल की उम्र में बैलेंस और 40 साल की उम्र में ग्रोथ पर फोकस जरूरी होता है

अगर आप भी निवेश कर रहे हैं या अपनी निवेश यात्रा करना चाहते हैं तो अपने लक्ष्य, परिवार, इनकम और बच्चों की स्थिति को देखकर ही निवेश यात्रा शुरू करें। बेहतर प्लानिंग के साथ निवेश करने तो भविष्य में आसानी होगी और आर्थिक रूप से संपन्न रहेंगे। कहते हैं उम्र का हर दशक अपनी अलग-अलग जिम्मेदारियां और मौके लेकर आता है। 20 साल की उम्र में जहां रिस्क लेने का समय होता है, काम

उम्र के हिसाब से करें प्लानिंग, 20 में रिस्क 30 में बैलेंस और 40 साल में ग्रोथ जरूरी

काम की क्षमता अधिक होती है, वहीं 30 साल की उम्र में बैलेंस और 40 साल की उम्र में ग्रोथ पर फोकस जरूरी होता है। अगर आप उम्र के हिसाब से सही फाइनेंशियल प्लानिंग करते हैं, तो न सिर्फ रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड बना सकते हैं, बल्कि जिंदगी भर पैसों की चिंता से भी दूर रह सकते हैं। आज के वक्त में फाइनेंशियल सिक्योरिटी सिर्फ जरूरत नहीं, बल्कि एक आदत बननी चाहिए। ताकि आर्थिक रूप से परेशान न हों और भविष्य हर तरह से बढ़िया रहे। हम सब मेहनत तो करते हैं, लेकिन कमाई का सही इस्तेमाल तभी होता है जब उसके पीछे एक स्ट्रॉक फाइनेंशियल प्लान हो। रिस्क से लोग कहते हैं कि पैसे बचाने की शुरुआत बाद में करेंगे, लेकिन सच्चाई यह है कि जितनी जल्दी प्लानिंग शुरू करेंगे, उतना मजबूत होगा आपका प्युवर हर दशक अपने साथ नई जिम्मेदारियां और अवसर लेकर आता है। 20 साल की उम्र में में जहां रिस्क लेने का समय होता है, वहीं 30 साल की उम्र में जिम्मेदारियों और इन्वेस्टमेंट में बैलेंस बनाना जरूरी होता है। 40 साल की उम्र में आते-आते सेप्टी और ग्रोथ पर फोकस करना समझदारी बन जाती है। अगर आप उम्र के हिसाब से फाइनेंशियल फेसल्टी लेते हैं, तो न सिर्फ एक मजबूत रिटायरमेंट फंड बना सकते हैं, बल्कि जिंदगी भर पैसों की चिंता से आजादी भी पा सकते हैं।

जानकारी बिगनेस डेस्क

30 साल की उम्र जिम्मेदारियों व निवेश में बैलेंस का समय

इस दशक में शादी, बच्चों की पढ़ाई और घर की प्लानिंग जैसी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। ऐसे में बैलेंस बनाना जरूरी हो जाता है। फाइनेंशियल गोल्स अपडेट करें बच्चों की पढ़ाई, घर खरीदने या रिटायरमेंट जैसे लक्ष्यों को री-इवैल्यूएट करें। हर 2 साल में अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करें। एसआईपी बढ़ाते रहें सैलरी बढ़ने के साथ हर साल अपनी एसआईपी में 10-15% इजाफा करें। कोशिश करें कि इनकम का 30-40% निवेश में लगाएं। एसेट एलोकेशन पर ध्यान दें 40% इक्विटी, 40% डेट और 20% गोल्ड या पीपीएफ जैसे सुरक्षित निवेश रखें। इन्वेस्टमेंट और रिटर्न में सही संतुलन बना रहेगा। एनपीएस में निवेश करें नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) टैक्स छूट देता है और रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड तैयार करता है।

इंश्योरेंस लेना न भूलें

कम उम्र में प्रीमियम सस्ता होता है। हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस दोनों लें, ताकि मेडिकल और लाइफ रिस्क से सुरक्षा बनी रहे। कोई भी परेशानी आने पर परिवार पर अतिरिक्त दबाव न पड़े।

जल्दी निवेश शुरू करें

कम्पाउंडिंग की ताकत का फायदा तभी मिलता है जब शुरुआत जल्दी की जाए। आपका प्युवर हर दशक अपने साथ नई जिम्मेदारियां और अवसर लेकर आता है। 20 साल की उम्र में में जहां रिस्क लेने का समय होता है, वहीं 30 साल की उम्र में जिम्मेदारियों और इन्वेस्टमेंट में बैलेंस बनाना जरूरी होता है। 40 साल की उम्र में आते-आते सेप्टी और ग्रोथ पर फोकस करना समझदारी बन जाती है। अगर आप उम्र के हिसाब से फाइनेंशियल फेसल्टी लेते हैं, तो न सिर्फ एक मजबूत रिटायरमेंट फंड बना सकते हैं, बल्कि जिंदगी भर पैसों की चिंता से आजादी भी पा सकते हैं।

अधूरे दस्तावेज या अधूरी जानकारी के साथ निवेश की शुरुआत नहीं हो सकेगी

म्यूचुअल फंड निवेश प्रक्रिया में हो रहे हैं अहम बदलाव, निवेशकों पर क्या होगा असर

अभी तक कई मामलों में अकाउंट केवाईसी प्रक्रिया पूरी होने से पहले ही खुल जाता था

एक बार फिर म्यूचुअल फंड प्रक्रिया में बदलाव हो रहे हैं। इसका निवेशकों पर भी असर पड़ना स्वाभाविक है। इसके कुछ फायदे होंगे तो कुछ नुकसान भी निवेशकों को भुगतने पड़ सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि आप भी निवेशक हैं या निवेश यात्रा शुरू करने जा रहे हैं तो आप अलर्ट हो जाएं और सभी दस्तावेजों को जांचके के बाद ही निवेश यात्रा शुरू करें। बताया जा रहा है कि मार्केट रेगुलेटर सेबी द्वारा एक बार फिर म्यूचुअल फंड के नियमों में रिफॉर्म का प्रपोजल लाया गया है। सेबी ने निवेशकों और एसेट मैनेजमेंट कंपनियों (एएमसी) को हो रही दिक्कतों को कम करने के लिए नए म्यूचुअल फंड फॉलियो में पहली बार किए जाने वाले निवेश (पहला ट्रांजेक्शन) की प्रक्रिया को एक जैसा (स्टैंडर्ड) बनाने का प्रस्ताव दिया है। सेबी ने प्रस्ताव रखा है कि अब म्यूचुअल फंड अकाउंट केवल तब ही खोले जा सकेंगे जब निवेशक की केवाईसी प्रक्रिया पूरी तरह से सत्यापित हो जाएगी। हालांकि सेबी की तरफ से की जा रही इस कार्यवाही से निवेशकों को लाभ ही होगा और वे किसी भी तरह के फर्जीवाड़े से बच सकेंगे।

अब से पहले, म्यूचुअल फंड्स के निवेशकों को अपने निवेश के रिस्क पैरामीटर्स की जानकारी महीने के अंत में मिलती थी, यह जानकारी हर महीने के 15 दिन के भीतर उपलब्ध होगी।

सेबी म्यूचुअल फंड के नियमों में रिफॉर्म का प्रपोजल लाया, सभी दस्तावेज देने होंगे

असल में मार्केट रेगुलेटर सेबी द्वारा समय समय पर म्यूचुअल फंड के नियमों में कुछ न कुछ बदलाव किया जाता है, ताकि निवेशकों का हित बना रहे, साथ ही एसेट मैनेजमेंट कंपनियों को भी आसानी हो। बीते कुछ सालों में म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री का लोकप्रियता निवेशकों के बीच बहुत ज्यादा बढ़ी है। इंडस्ट्री का कुल एयूएम 75 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा हो गया है। ऐसे में सेबी समय समय पर यह ध्यान रखती है कि नियमों में कुछ बदलाव किया जाए या रिफॉर्म किया जाए। बीते कुछ महीनों में सेबी ने कुछ बदलाव या रिफॉर्म किए हैं और आगे के लिए भी कुछ प्रपोजल हैं। ये निवेशकों को म्यूचुअल फंड में निवेश के दौरान बड़ी राहत देने का काम करेंगे। आप भी निवेश करने जा रहे हैं अपने दस्तावेजों को साथ रख लें।

डिस्क्लोजर नियमों में बदलाव

एफएफआई और सेबी ने छोटे निवेशकों की सुरक्षा के लिए डिस्क्लोजर नियमों में बदलाव किया है। निवेशकों को अपने निवेश के लिए अधिक स्पष्ट और विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का अधिकार होगा। यह नियम निवेशकों को उनके निवेश के लिए सही और समय पर जानकारी प्राप्त करने में मदद करेगा।

कट-ऑफ टाइम में बदलाव

इस साल सेबी ने ओवरनाइट म्यूचुअल फंड स्कीम के लिए कट-ऑफ टाइम में बदलाव किया है। 1 जून 2025 से ऑफलाइन लेनदेन का समय दोपहर 3 बजे तक हो गया है। ऑनलाइन लेनदेन का समय शाम 7 बजे तक है। इन समयों के बाद किए गए लेनदेन अगले कारोबारी दिन प्रोसेस होंगे, जिससे एनएवी (नेट एसेट वैल्यू) बदल सकती है। बदलाव प्लेजिंग (गिरवी रखने) की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए किया गया है।

एनएफओ को लेकर क्या बदलाव

एसेट मैनेजमेंट कंपनियों को न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) से जुड़ाए गए पैसों को तय समय में निवेश करना होगा। अगर वे ऐसा नहीं करते, तो निवेशक बिना एग्जिट लोड दिए अपना पैसा निकाल सकते हैं। यह नियम एएमसी को जरूरत से ज्यादा पैसा जुटाने से रोकेंगे और सही जगह निवेश सुनिश्चित करेगा। इसके लिए 30 दिन का समय निर्धारित है।

स्ट्रेस टेस्ट के नतीजे बताने होंगे

म्यूचुअल फंड स्कीम को स्ट्रेस टेस्ट के नतीजे बताने होंगे, ताकि निवेशकों को स्कीम की वित्तीय स्थिति का सही अंदाजा हो सके। एएमसी कर्मचारियों की सैलरी का कुछ हिस्सा म्यूचुअल फंड स्कीम में लगाया जाएगा। कितना पैसा और कितनी स्कीम में निवेश होगा, यह उनकी भूमिका पर निर्भर करेगा। इससे कर्मचारियों और निवेशकों का हित एक जैसा होगा।

आरएसबीवीपी प्रतियोगिता में विद्यालयों से सर्वश्रेष्ठ विज्ञान मॉडल किए जाएंगे प्रदर्शित

■ खंड स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक विद्यार्थियों को मिलेगा भाग लेने का मौका

विद्यार्थियों के विज्ञान मॉडल तैयार करेंगे और विषयों, दिशानिर्देशों और मानदंडों के अनुसार ब्लॉक स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी 2025-26 में मॉडल के साथ अपने विद्यालय की भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। कनीना के विद्यालयों से विद्यार्थी 11 नवंबर को राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कनीना में, नांगल चौधरी खंड में 11 नवंबर को ही पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नांगल चौधरी में, नारनौल में 12 नवंबर को राजकीय उच्च विद्यालय हमीदपुर में, महेंद्रगढ़ में 12 को पीएमश्री राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय महेंद्रगढ़ में और अटेली

क्या कहते हैं डीईओ
जिला शिक्षा अधिकारी सुनील दत्त ने बताया कि विज्ञान एवं गणित के बच्चों, शिक्षकों व आमजन के बीच वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित और विकसित करने के उद्देश्य से बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है। सभी विद्यालय मुखिया अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को अपनी प्रदर्शनी और मॉडल तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करें। शिक्षकों को निर्देशित करें कि वे विद्यार्थियों को उपयुक्त परियोजना उप-विषय आवंटित करने में मार्गदर्शन करें और उन्हें अपनी परियोजना की योजना बनाने में सहायता करें।
खंड के विद्यालयों से विद्यार्थी 12 नवंबर को खंड स्तरीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में राजकीय विद्यालय बाछोद में भाग लेंगे।
उद्देश्य और कार्य योजना
वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना: स्कूली विद्यार्थियों में वैज्ञानिक

बीते वर्ष यह थी उपलब्धि
गत वर्ष भी महेंद्रगढ़ जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दौडा आहीर की कक्षा नौवीं में पढ़ने वाला छात्र मनीष ने 26 दिसंबर से 31 दिसंबर, 2024 तक हरियाणा खेल विश्वविद्यालय राई (सोनोपत) हरियाणा में आयोजित हुई 51 वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में जिले और राज्य का प्रतिनिधित्व किया था। जिसमें देशभर के विभिन्न राज्यों से कुल 185 और हरियाणा राज्य के कुल 96 प्रतिभागी थे। पुणे में हुई 50 वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में भी जिले से राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय कनीना की छात्रा हिमांशी ने भाग लिया था। इस तरह की उपलब्धियां सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों को प्रेरित करती हैं। वैज्ञानिक प्रदर्शनी में प्रदर्शित होने वाले मॉडल विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच को प्रोत्साहित करते हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता रखते हैं।
और गणित में छात्रों के बीच आविष्कारशील और रचनात्मक प्रतिभा की पहचान करना और उसका पोषण करना।
स्तरीय प्रतियोगिता: ब्लॉक स्तर के कार्यक्रम जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों के लिए सहायक होते हैं।

क्या कहते हैं डीएसएस
जिला विज्ञान विशेषज्ञ रविंद्र कुमार ने बताया कि मॉडल में कक्षा छठी से बारहवीं के विद्यार्थी सर्वप्रथम खंड स्तर पर भाग लेंगे। खंड स्तर पर सात उपविषयों पर होने वाली बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी में सभी उपविषयों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी जिला स्तर पर भाग लेंगे। प्रत्येक खंड से कुल 21 विद्यार्थी अपने मार्गदर्शक अध्यापक के साथ जिला स्तर पर भाग लेंगे। जिला स्तर पर विजेता विद्यार्थी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी भागीदारी दिखा सकते हैं।
विषय एवं उपविषय
इस प्रदर्शनी का मुख्य विषय विकासशील और आत्मनिर्भर भारत के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी, और गणित (एसटीईएम) है। इसमें सात अलग अलग उपविषयों पर विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार के मॉडल बनाकर खंड स्तर पर भाग लेना है। उप-विषय सतत कृषि, अपशिष्ट प्रबंधन और प्लास्टिक के विकल्प, हरित ऊर्जा, उमरती प्रौद्योगिकियां, मनोरंजक गणितीय मॉडलिंग, स्वास्थ्य और स्वच्छता, जल संरक्षण और प्रबंधन है।

खबर संक्षेप

यूरो स्कूल में सांस्कृतिक समारोह आयोजित

कनीना। यूरो स्कूल में हरियाणा दिवस के मौके पर सांस्कृतिक समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि ने ज्ञान की देवी मां सरस्वती के चित्र के सामने दीप प्रज्वलित करके किया। प्राचार्य सुनील यादव ने कहा कि आज के प्रतिस्पर्धा वाले दौर में विद्यार्थी संस्कृति और संस्कारों को भूलते जा रहे हैं। उनका ध्येय है कि अपनी संस्कृति व अच्छे संस्कारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर सकें तथा वे अपने उज्वल भविष्य व अपने पारिवारिक संबंधों के प्रति जागरूक हों। इस मौके पर सतवीर यादव, लखन लाल, मीनू दूबे, विकास, कंवर सिंह, रिंतु नंबर, सुमन यादव, तन्तु गुप्ता आदि उपस्थित थे।

महिला नवंबरदा बने एनसीसीए के अध्यक्ष

कनीना। नेशनल क्राइम कंट्रोल ऑर्गेनाइजेशन ने गांव बागोत निवासी महिला नवंबरदा को प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। इस नियुक्ति पर उन्होंने राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील अत्री, चेयरमैन अमन गुप्ता का आभार जताया है। उन्होंने कहा कि उनकी नियुक्ति के बाद वे गरीब लोगों की सहायता व इंसाफ दिलाने में मदद करेंगी।



विजय इंटरनेशनल स्कूल में नया हरियाणा दिवस

महेंद्रगढ़। विजय इंटरनेशनल स्कूल हरियाणा दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों ने भाग लिया और हरियाणा की संस्कृति और इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रम की शुरुआत विद्यालय संरक्षक महेंद्र सिंह द्वारा मां सरस्वती की सामने दूध चढ़ाकर प्रार्थना करके की गई। छात्रों ने हरियाणा की संस्कृति का प्रदर्शन किया, जिसमें पारंपरिक नृत्य, संगीत और नाटक शामिल थे। छात्रों को हरियाणा के इतिहास और इसके महत्व के बारे में जानकारी दी गई। विभिन्न प्रतियोगिताओं में छात्रों ने भाग लिया और पुरस्कार जीते। प्रधानाचार्य नरेश सिंह ने छात्रों को हरियाणा दिवस की शुभकामनाएं दीं और कहा कि यह दिन हमें हरियाणा की समृद्ध संस्कृति और इतिहास के बारे में जानने का अवसर प्रदान करता है। समापन में चेयरमैन विजय यादव टूटना ने सभी को बताया कि हरियाणा आज ही के दिन एक नवम्बर 1966 को पंजाब से अलग होकर अलग राज्य बन था और तब से आज तक प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता जा रहा है।



यदुवंशी में इंटर स्कूल साइंस विजय प्रतियोगिता आयोजित

महेंद्रगढ़। यदुवंशी स्कूल में इंटर स्कूल साइंस विजय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में यदुवंशी की सभी 14 शाखाओं की टीमों ने बड़-चढ़कर भाग लिया और अपने विज्ञान ज्ञान का प्रदर्शन किया। विजय के दौरान विज्ञान से संबंधित विविध प्रश्न पूछे गए, जिसका उत्तर प्रत्येक टीम ने उत्साहपूर्वक दिया। प्रतियोगिता का आयोजन दो वर्ग 9वीं व 10वीं व 11वीं व 12वीं कक्षा गुप में हुआ। प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तर्कशक्ति और जिज्ञासा को बढ़ावा देना था। निर्णायक का निर्णय निष्पक्ष और उचित रहा, जिसमें 9-10 कक्षा वर्ग में यदुवंशी सनाली, यदुवंशी मंदौला संयुक्त रूप से प्रथम यदुवंशी जीत द्वितीय व यदुवंशी महेंद्रगढ़ तृतीय स्थान पर रहे। वहीं 11-12 कक्षा गुप वर्ग में प्रथम स्थान पर यदुवंशी हॉसी, द्वितीय स्थान पर यदुवंशी महेंद्रगढ़ व यदुवंशी नारनौल व तृतीय स्थान पर यदुवंशी, धनवास रहा। विजेता टीम को मोमेंटो व सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। गुप के चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने प्रतियोगिता के सफल आयोजन पर हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस विजय का उद्देश्य केवल विजेता तय करना नहीं, बल्कि प्रत्येक छात्र में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और जिज्ञासा की भावना को विकसित करना है। विज्ञान केवल एक विषय नहीं है, यह सोचने, समझने और नए आयाम खोजने की प्रक्रिया है। इस अवसर पर वाइस चेयरमैन एडवोकेट कर्णसिंह यादव, वाइस चेयरमैन संगीता यादव, गुप निदेशक विजय सिंह यादव, फाउंडर डायरेक्टर डॉ. राजेन्द्र सिंह यादव ने शुभकामनाएं दीं।

लोगों में प्रशासन के प्रति बढ़ रहा आक्रोश

विवाह शादियों के सीजन से बाजार गुलजार, अतिक्रमण बनी परेशानी



महेंद्रगढ़। शंकर मार्केट में लगा जाम। फोटो: हरिभूमि

इसके बाद भी प्रशासन द्वारा इस ओर कार्रवाई नहीं की जाती है। शहर के मुख्य बाजार और चौराहों को भी अतिक्रमण से मुक्त नहीं कराया जा रहा है। इस समय शहर का मुख्य बाजार के हालत यह है कि दिन में बाइक निकालना भी मुश्किल हो जाता है। क्योंकि दुकानें सड़क तक फैली हुई हैं, इसके बाद वहां पर अस्थाई रेहड़ी लगाने के कारण बाजारों ने गलियों का रूप ले लिया है। अतिक्रमण के कारण यहां दिन में पैदल निकलना भी मुश्किल हो जाता है। सड़क एक छोटी सी गली बनकर रह जाती है।
बाजार में महिला ग्राहकों की संख्या ज्यादा रहती है। शहर के बालाजी चौक से सब्जी मंडी की ओर जाने वाले मार्ग पर हर समय जाम की समस्या रहती है। खास बात यह है कि यहां पर पुलिस कर्मी होने के बाद भी लोग जाम के झाम से जूझते हैं। यही नहीं आवाग पशु भी अक्सर यहां पर परेशानी का सबब बन जाते हैं। ऐसे में कई बार यहां पर लंबा जाम लग जाता है। जिससे लोग में प्रशासन के प्रति आक्रोश बढ़ रहा है। आसपास के रहने वालों ने बताया कि यहां पर पुलिसकर्मी

विवाह-शादी के सीजन में बढ़ रही परेशानी
इस समय शादी-विवाह का सीजन चल रहा है। इसलिए प्रतिदिन हजारों की संख्या में आसपास के गांवों सहित शहरवासी बाजारों में खरीदारी करने के लिए पहुंच रहे हैं। लेकिन पार्किंग नहीं होने के कारण वे अपने वाहन इधर-उधर खड़ा कर देते हैं या फिर बाजारों में ही वाहन ले जाते हैं। इससे हमेशा जाम की स्थिति बनी रहती है। इससे अन्य वाहन चालक व राहगीरों को भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

शादियों का सीजन शुरू
बता दे कि विवाह-शादियों का सीजन शुरू हो चुका है। जिससे बाजार में ग्राहकों के साथ वाहनों की संख्या भी बढ़ गई है। इस वक्त बाजार में सभी प्रकार के वाहन आना जाना शुरू हो गए हैं। इस कारण बाजार में शादी ब्याह का सामान उठाने के लिए ट्रैक्टर, ट्रैली के साथ लोडिंग वाहन की संख्या भी अधिक बढ़ गई है। जिससे लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

शहर के ये बाजार अतिक्रमण की चपेट में

बता दे कि शहर की गांधी मार्केट, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, 11 हट्टा बाजार, आईटीआई रोड, रेलवे रोड, सिनेमा रोड, सरफा बाजार, अंबेडकर चौक की ओर जाने वाला मार्ग, मसाली चौक, मसाली चौक की ओर जाने वाला मार्ग सहित अनेक बाजारों में दुकानदारों ने अतिक्रमण किया हुआ यहाँ नहीं नगर पालिका कार्यालय के सामने बनी दुकानदारों ने भी आधी सड़क पर अपना सामान रखकर अतिक्रमण किया हुआ। ऐसे में अंदाजा लगाया जा सकता नगर पालिका कार्यालय के सामने ही अतिक्रमण है तो वह नगर पालिका के अधिकारी शहर को कैसे अतिक्रमण मुक्त करवा पाएगा।

चार वरिष्ठ लैब सहायकों को पदोन्नत करने के आदेश

हरिभूमि न्यूज़ ►► नारनौली
भारतीय जनता पार्टी ने हेमंत चौबे को नारनौल मंडल अध्यक्ष नियुक्त किया है। शनिवार को पार्टी कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान जिला अध्यक्ष डॉ. यतेंद्र राव ने बताया कि हेमंत चौबे की संगठन के प्रति निष्ठा व कार्यशीलता पार्टी के लिए प्रेरणादायक रही है। हेमंत हुए यह जिम्मेदारी सौंपी। इस अवसर पर पार्टी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने हेमंत चौबे का फूलमालाओं से स्वागत किया। पूर्व में भाजपा के जिला सह प्रवक्ता व मंडल महामंत्री रह चुके हेमंत चौबे बजरंग दल के जिला संयोजक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। पार्टी में लंबे समय से सक्रिय चौबे ने विभिन्न पदों पर रहते हुए अनेक सफल कार्यक्रमों का संचालन किया है। जिला अध्यक्ष डॉ. यतेंद्र राव ने बताया कि हेमंत चौबे की संगठन के प्रति निष्ठा व कार्यशीलता पार्टी के लिए प्रेरणादायक रही है। हेमंत हुए यह जिम्मेदारी सौंपी। इस अवसर पर पार्टी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने हेमंत चौबे का फूलमालाओं से स्वागत किया। पूर्व में भाजपा के जिला सह प्रवक्ता व मंडल महामंत्री रह चुके हेमंत चौबे बजरंग दल के जिला संयोजक के रूप में भी कार्य कर चुके हैं। पार्टी में लंबे समय से सक्रिय चौबे ने विभिन्न पदों पर रहते हुए अनेक सफल कार्यक्रमों का संचालन किया है।



आरपीएस स्कूल में हरियाणा दिवस पर प्रस्तुत किए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम

कनीना। आरपीएस इंटरनेशनल स्कूल मड़फ में हरियाणा दिवस का आयोजन बड़े उत्साह के साथ किया गया। विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिनमें नृत्य, गायन, रागिनी, भाषण और विकास प्रतियोगिता आदि शामिल थीं। इन गतिविधियों ने हरियाणा की समृद्ध संस्कृति और विरासत को प्रदर्शित करने का एक शानदार अवसर प्रदान किया। स्कूल की अध्यक्ष डॉ. पवित्रा राव, सीईओ मनीष राव और डिप्टी सीईओ कुणाल राव भी इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने विद्यार्थियों की प्रतीभा की सराहना की और उन्हें हरियाणा की समृद्ध संस्कृति और विरासत पर गर्व करने के लिए प्रेरित किया। हरियाणा दिवस के इस आयोजन ने विद्यार्थियों में राज्य की संस्कृति और इतिहास के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्कूल प्रिंसिपल यशोति भट्ट ने इस आयोजन के लिए विद्यार्थियों और शिक्षकों की कड़ी मेहनत की सराहना की और भविष्य में भी ऐसे आयोजनों को जारी रखने का आश्वासन दिया।

अध्यापिकाओं की म्यूजिकल चैयररैस के साथ साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं फाइनल मुकाबले आज

हरिभूमि न्यूज़ ►► महेंद्रगढ़
मॉडर्न सीनियर सेकेंडरी स्कूल प्रांगण में शनिवार को 22वें दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का रंगारंग शुभारंभ किया गया। इस मौके पर पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी रामानंद मुख् अतिथि थे। स्कूल के डायरेक्टर हुक्मसिंह तंवर व मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. सुरेंद्र सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। जबकि मंच संचालन राजनीतिज्ञ विज्ञान के प्रवक्ता रामनिवास चैहान ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर किया। उसके बाद स्कूल की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।
ये हुए आज मुकाबले:
खेल प्रतियोगिताओं के बारे में जानकारी देते हुए विद्यालय के प्राचार्य प्रदीप कुमार ने बताया कि सर्वप्रथम लड़कियों के सीनियर वर्ग में 100 मीटर की दौड़ करवाई गई, जिसमें रानी लक्ष्मीबाई हाउस से



यह बोले मुख्यातिथि

मुख्य अतिथि ने कहा कि विद्यार्थी जीवन में खेलों का अत्यंत महत्व है। खेलों के बिना विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव नहीं है। एक अच्छा खिलाड़ी खेलों के माध्यम से भी अपने साथ-साथ अपने माता-पिता व देश का नाम गौरवांवि कर सकता है, इसलिए प्रत्येक विद्यार्थी को हर जीत की परवाह ना करते हुए प्रत्येक प्रतियोगिता में अवश्य भाग लेना चाहिए। चेयरमैन सतन सिंह ने सभी विद्यार्थियों को खेल को खेल की भावना से खेलने की शपथ दिलवाते हुए कहा कि खेल में हार व जीत तो होती रहती है। खेलों से विद्यार्थियों में अनुशासन, प्रतिस्पर्धा, परिश्रम की भावना भी उत्पन्न होती है, जो बच्चों को अपने जीवन के लक्ष्य को हासिल करने में सार्थक सिद्ध होती है।



सीएल स्कूल में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

नारनौली। पुलिस की ओर से नशा मुक्ति जागरूक अभियान के तहत सीएल पब्लिक स्कूल में जागरूकता सभा आयोजित की गई। कार्यक्रम में महावीर चौकी प्रभारी जयधरगवान की उपस्थिति में हरियाणी फिल्म डायरेक्टर भारत बोहरा व उनके समूह के अन्य कलाकारों ने स्कूल के विद्यार्थियों को एक लघु नाटिका के माध्यम से नशा मुक्ति व साइबर अपराध के बढ़ते हुए मामलों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने विद्यार्थियों को जागरूक करते हुए समझाया कि किसी भी तरह के नशे को न अपनाने की जागरूकता स्वयं हमें अपने अंदर लानी होगी तथा समाज में अचान अचानो सहयोग देना होगा। इस संबंध में बच्चों तथा अध्यापकों को नशा न करने की शपथ दिलाई गई। इसके साथ नाटक के माध्यम से कलाकारों ने विद्यार्थियों को संवेत करने हुए समझाया कि अनजान लिंक पर क्लिक न करें तथा किसी अनजानी व्यक्ति को किसी भी परिस्थिति में ओटीपी न बताएं। यदि किसी के साथ साइबर अपराध हो जाता है, तो बिना देरी के हल्पलाइन नम्बर 1930 पर सूचना देकर अपनी शिकायत दर्ज करवाएं।



नासा स्कूल में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित

महेंद्रगढ़। हरियाणा स्थापना दिवस पर नासा पब्लिक स्कूल में हरियाणा को जानने प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। चेयरमैन सुरेश कुमार भगडान ने बताया कि इस दौरान एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बच्चों ने प्रतियोगिता में बड़-चढ़कर भाग लिया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में पुष्पों ने प्रथम, राशु ने द्वितीय तथा तनिष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। चेयरमैन सुरेश कुमार ने बच्चों को हरियाणा के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने हरियाणा के जन्म से लेकर उसकी प्रगति, संस्कृति और रीति रिवाज के बारे में बच्चों को बताया। इस अवसर बच्चों ने इंडोर गेम्स शतरंज और लूडो खेल कर मनोरंजन किया। इस अवसर पर संजीव कुमार, नवनीत, हवासिंह गडानिया, हितेश, अंजलि, शीतल, पूजा और सुष्मा आदि मौजूद रहे।

स्लम एरिया टैलेट में बच्चों ने दिखाई संस्कृति की झलक

नारनौली। स्लम एरिया टैलेट प्रांगण में हरियाणा दिवस बड़े उत्साह व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत हरियाणा राज्य के गौरवगान के साथ हुई। जिसके बाद बच्चों ने अपनी अपनी प्रस्तुतियों से सभी का दिल जीत लिया। कार्यक्रम में कुल 12 बच्चों ने हिस्सा लिया। जिन्होंने रपीच, नृत्य व गायन के माध्यम से हरियाणा की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं, गौरवशाली इतिहास को बखूबी प्रस्तुत किया। कुछ बच्चों ने हरियाणा की मिट्टी से जुड़े लोकगीत व नृत्य प्रस्तुत कर वातावरण को हरियाणावी रंग में रंग दिया।



महेंद्रगढ़। दौड़ लगाते किड्स के बच्चे। फोटो: हरिभूमि

ओम साईराम स्कूल में खेल प्रतियोगिताएं आयोजित

महेंद्रगढ़। श्री ओम साईराम किड्स प्ले स्कूल की कक्षा प्री नर्सरी से कक्षा दूसरी तक के बच्चों की दो दिवसीय खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन गत दिवस करवाया गया। प्राचार्या सविता यादव की देखरेख में करवाई गई इन प्रतियोगिताओं के अंतर्गत सभी कक्षाओं की दौड़ में अंशु छवि, आरौही, देव, रोहित, जियान, तवीश, कार्तिक, राश प्रथम स्थान पर रहे। तेजस, अक्वी, वंशिका, भावेन, नय्या, यशमान, कनिष्का, तनिष, ऋषभ द्वितीय स्थान पर तथा राघव, पूर्ण, दक्षित, तेजस्विनी, युक्तराज, गीतिका, हरशी, मनिष्य, लक्ष्य तृतीय स्थान पर रहे। गुब्बारा दौड़ में अंशु, आरौही, ध्रुव, रोहित प्रथम स्थान पर शिवांश, दक्षित, लव्यांस, मुकुल द्वितीय व पूरव, वंशिका, भावेन, दक्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्राचार्या सविता यादव के द्वारा सभी में मेधावी बच्चों को पुरस्कार से सम्मानित करके उन्हें प्रोत्साहित किया गया।

देवयानी इंटरनेशनल स्कूल में नया हरियाणा दिवस

महेंद्रगढ़। देवयानी इंटरनेशनल स्कूल खेल में हरियाणा दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। नौवीं कक्षा से छात्रा पूजा ने हरियाणावी बोली में भाषण देते हुए कहा कि हमें पिज्जा, बर्गर पचता कोनी, साधारण सै म्हरा खाना। इससे मे म्हरा हरियाणा। लडकी कक्षा ने नय्या यादव ने हरियाणा की स्थापना पर टिप्पणी करते हुए विचार प्रस्तुत किए। छात्रा जानवी, दिव्या, अशिका यादव, हरमनाझ ने भी हरियाणा की प्रतिभाओं का बखान करते हुए विचार प्रकट किए। छात्रा दिव्या चौधरी ने 'मे सू हरियाणा की छेरी' गीत पर सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया। हाउस कॉर्डिनेटर इंदर-अरं रोहित यादव ने अपने भाषण में इरे-अरे हरियाणा को साफ सुथरा रखने पर बल दिया। मंच संचालक अध्यापिका अनिता शर्मा ने अपने विचार प्रस्तुत किया कि हरियाणा भारत वन में समृद्ध प्रांतों में गिना जाता है। यहां की छरी-अरी हरियाली और सौधा खाद खाना इनकी पहचान है। हमें हमारे हरियाणा और हरियाणावी होने पर गर्व है, क्योंकि खेलों में पूरे देश का नेतृत्व हमारा हरियाणा करता है।



खबर संक्षेप

सैनिक कैटीन के प्रबंधक खुशीराम हुए सेवानिवृत्त

कोसली। कोसली सैनिक कैटीन के प्रबंधक रिटायर्ड कमांडर खुशीराम यादव की सेवानिवृत्ति के अवसर पर ससम्मान विदाई दी गई। कैटीन के पूर्व प्रबंधक ले. कर्नल शिवकुमार ने कमांडर खुशीराम यादव का कार्यकाल की सराहना की। इस मौके पर नवनिर्वाहक प्रबंधक कैप्टन सीताराम ने कहा कि वे अपने सीनियर्स की तर्ज पर ही कैटीन के स्टाफ और सैनिक परिवारों से सामंजस्य स्थापित कर अपना कार्य करेंगे। एडवोकेट कैप्टन सुभाष ने कहा कि खुशीराम यादव का सौहार्दपूर्ण व्यवहार सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभाव व बचाव बताएं

रेवाड़ी। जिले को नशा मुक्त बनाने की दिशा में जिला पुलिस की नशा मुक्त टीम लगातार ग्रामीण दौरे करके लोगों को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक कर रही है। निरीक्षक रामपाल के नेतृत्व में जिला पुलिस की नशा मुक्त टीम ने गांव प्राणपुरा व चिमनावास में ग्रामीणों के साथ बैठक कर गांवों को नशा मुक्त करने तथा युवाओं को नशे से दूर रखने के लिए प्रेरित किया। निरीक्षक रामपाल ने कहा कि पुलिस और आमजन आर आपस में ताकतमेल के साथ कार्य करें तो नशे जैसी बुराई पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

विद्यार्थियों को दिलाई नशा मुक्त रहने की शपथ

मीरपुर। हरियाणा स्टेट नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो जिला यूनिट की ओर से शनिवार को इंदिरा गांधी यूनिवर्सिटी मीरपुर में नशे के खिलाफ एक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया। एनसीबी टीम ने युवाओं को नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराया। यूनिट के निरीक्षक नीरज ने कहा कि नशा एक दमक की तरह समाज को खोखला कर रहा है और यह गांवों, गलियों और घरों तक पहुंच चुका है।

भावांतर योजना के तहत बाजरे की खरीद बंद

रेवाड़ी। भारतीय किसान यूनियन चढ़नी की ओर से शनिवार को अनाजमंडी के गेट पर धरना-प्रदर्शन कर बाजरे की खरीद 15 नवंबर तक कराने की मांग की। अनाजमंडी में 31 अक्टूबर को भावांतर योजना के तहत बाजरे की खरीद बंद हो चुकी है। इस संबंध में यूनियन की ओर से दो दिन पहले मार्केट कमेटी सचिव को ज्ञापन देकर बाजरे की खरीद को चालू रखने की मांग की गई थी। भारतीय किसान यूनियन चढ़नी की ओर से शनिवार को अनाजमंडी के गेट पर धरना दिया गया। धरने पर पहुंचे मार्केट कमेटी सचिव नरेंद्र यादव ने न्यू आर कर कोड से टोकन काटने शुरू कर दिए हैं और बाजरे की खरीद चालू कर दी है।

यादव समा का फ्री चिकित्सा जांच कैंप आज

रेवाड़ी। यादव कल्याण सभा की ओर से 2 नवंबर को सुबह 9 से 11 बजे तक गढ़ी बोलनी रोड स्थित श्री कृष्ण भवन में फ्री चिकित्सा शिविर आयोजित किया जाएगा, जिसमें मरीजों को फ्री दवाईयां भी प्रदान की जाएंगी। यादव सभा प्रवक्ता प्रो. सतीश यादव ने बताया कि शिविर में डा. एच आर यादव मेडिसिन, डा. प्रशान्त यादव हड्डी रोग, डा. पवन यादव न्यूरो सर्जरी, डा. विदुला नेत्र रोग, डा. कोमल यादव दंत रोग व डा. सुमन स्त्री रोग में ओपीडी सेवाएं प्रदान करेंगे।

श्याम प्रभु खाटूवाले का जन्मोत्सव मनाया

कोसली। देवउठनी ग्यारस पर गांव गुडियानी में शनिवार को श्रद्धा और भक्ति के साथ श्री श्याम प्रभु खाटूवाले का जन्म महोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ विजय गुडियानी ने किया। आयोजन के दौरान यंग रामलीला ग्राउंड से शुरू हुई शोभायात्रा बाजारों से होते हुए श्याम मंदिर तक पहुंची। यात्रा में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया। इस मौके पर श्री श्याम शिव शक्ति मंडल, गुडियानी सरपंच नरेंद्र कुमार, रिंकू, देव बबलू, मनोज राजोरा, सुरेश नंबरदार, नवीन व पूर्व सरपंच कालू सिंह सुखपुर सहित अनेक लोग मौजूद थे।

हरियाणा दिवस पर बाल भवन में हुआ भव्य सांस्कृतिक उत्सव

विधायक लक्ष्मण सिंह यादव रहे मुख्यातिथि, डीसी अभिषेक मीणा ने की अध्यक्षता

हरियाणा म्हारी शान, रेवाड़ी म्हारी जान, थीम से मनाया हरियाणा दिवस



रेवाड़ी। सांस्कृतिक उत्सव में लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए लक्ष्मण सिंह यादव व बाल भवन में आयोजित कार्यक्रम में युवा डांस करती छात्राएं व कार्यक्रम में डांस करती छात्रा।



रेवाड़ी। सांस्कृतिक उत्सव में लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए लक्ष्मण सिंह यादव व बाल भवन में आयोजित कार्यक्रम में युवा डांस करती छात्राएं व कार्यक्रम में डांस करती छात्रा।



फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज >>> रेवाड़ी

हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को बाल भवन परिसर में सांस्कृतिक उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। हरियाणा म्हारी शान, रेवाड़ी म्हारी जान थीम से हरियाणा दिवस मनाया। हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत की तर्ज पर सजाए गए बाल भवन में आयोजित सांस्कृतिक उत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने शिरकत की तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में भाजपा जिला अध्यक्ष वंदना पोपली मौजूद रही। डीसी अभिषेक मीणा की अध्यक्षता में आयोजित सांस्कृतिक उत्सव का शुभारंभ विधायक लक्ष्मण सिंह ने दीप प्रज्वलित कर किया। उत्सव में हरियाणा की परंपरा और विरासत पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुति दी गई। पंचकुला में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम का वचुरअल माध्यम से प्रसारण भी दिखाया गया। विधायक ने हरियाणावी लोक शैली में विद्यार्थियों द्वारा सुसज्जित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उत्सव में विधायक के मार्गदर्शन में तैयार हरियाणा गीत का भी गायन किया गया।

उद्योग क्षेत्र में हरियाणा का डंका बज रहा

इस मौके पर विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने कहा कि आज ही के दिन 36 साल पहले रेवाड़ी जिला बना था, जो कि प्रदेश के साथ कदम से कदम मिलाकर विकास की नई बुलंदियों को छू रहा है। वहीं अब रेवाड़ी में तेजी के साथ विकास का पहिया घूम रहा है। उन्होंने कहा कि हरियाणा ने अपने गठन के बाद से विकास की जो यात्रा शुरू की थी, वह आज नए आयाम हासिल कर रही है। चाहे कृषि हो या उद्योग, शिक्षा हो या स्वास्थ्य, रोजगार हो या डिजिटल तकनीक, हर क्षेत्र में हरियाणा ने अपनी अलग पहचान बनाई है। खेल से लेकर सेना व उद्योग क्षेत्र में भी हरियाणा का डंका बज रहा है। विधायक ने कहा कि हरियाणा आज देश के अग्रणी राज्यों में गिना जाता है। प्रति व्यक्ति आय के मामले में हम शीर्ष पर हैं। पंचायतों के माध्यम से गांव-गांव तक विकास की रोशनी पहुंच रही है। यह सब देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा मुख्यमंत्री नाथ सिंह सैनी के नेतृत्व में संभव हुआ है। सरकार का उद्देश्य आत्मनिर्भर भारत-आत्मनिर्भर हरियाणा बनाना है।

शानदार प्रस्तुतियों से समां बांधा

हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सांस्कृतिक उत्सव में जिलेभर के स्कूल और कॉलेज के विद्यार्थियों ने हरियाणावी लोक कला और परंपरा से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शानदार प्रस्तुतियों से समां बांधा। शिक्षा विभाग से कार्यवाहक प्राचार्य डा. ज्योत्सना यादव व प्रवक्ता पूनम यादव की संयुक्त टीम द्वारा तैयार कराए गए सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में सैनी पब्लिक स्कूल की छात्राओं ने सुन ले मेरा ठिकाना, देश में देश है भारत, भारत में हरियाणा... गीत पर सामूहिक नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी। जेतपुर गांव की राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्रा प्रिया ने सारा हिंदुस्तान घूम लिया, हरियाणा सा प्रदेश नहीं... रागिनी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय संगवाड़ी के विद्यार्थियों ने रंगकर्मी सतीश मस्तान के निर्देशन में तैयार लघु नाटक, इंदिरा गांधी विधि मीरपुर की छात्रा प्रिया ने एकल नृत्य, आरपीएस स्कूल धारुहेड़ा की छात्राओं ने सामूहिक नृत्य, आरपीएस हसाका के विद्यार्थियों ने देशभक्ति पर आधारित प्रस्तुति, राजकीय माध्यमिक विद्यालय बुधला के बच्चों ने गायन और पीएम श्री राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पाल्हावास की छात्राओं ने सामूहिक नृत्य की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उत्सव को शोभायमान किया।

प्रदर्शनी रही आकर्षण का केंद्र

सांस्कृतिक उत्सव में म्हारी विरासत, म्हारी संस्कृति आधारित प्रदर्शनी आकर्षण का केंद्र रही। इन प्रदर्शनी को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय संगवाड़ी के विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों के सहयोग से तैयार किया गया था। वहीं कार्यक्रम में साईंजी और रंगोली शिक्षा विभाग के कला संकाय के शिक्षकों द्वारा तैयार की गई। इसके अलावा कार्यक्रम में बनाए गए सैल्फ़ी प्लाइंट पर फोटो के लिए अपार उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर पीपीपी के स्टेट कोऑर्डिनेटर सतीश खोला, एडीसी राहुल मोदी, एसडीएम सुरेश कुमार, सीटीएम जितेंद्र कुमार, डीआईपीआरओ दिनेश कुमार, डीपीसी एवं पंच जिला शिक्षा अधिकारी राजेश शर्मा, डीसीडीएचओ वीरेंद्र यादव, पाल्हावास के पीएम श्री स्कूल की प्राचार्या शोभा मारुहाजन, भाजपा के जिला महामंत्री हिमांशु पालीवाल, भाजपा उपाध्यक्ष प्रवीण शर्मा, रजेश बंसल, रामपाल यादव व नीतू चौधरी सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

बाल भवन में लगाई लाडो लक्ष्मी योजना की हेल्प डेस्क

रेवाड़ी। हरियाणा दिवस पर बाल भवन में आयोजित सांस्कृतिक उत्सव में लाडो लक्ष्मी योजना के तहत महिलाओं के रजिस्ट्रेशन के लिए स्पेशल डेस्क लगाई गई। एडीसी राहुल मोदी के नेतृत्व में विभाग के कर्मचारियों की ओर से महिलाओं को लाडो लक्ष्मी योजना के बारे में जानकारी देकर पंजीकरण किए गए। मुख्यमंत्री नाथ सिंह मोदी द्वारा पंचकुला में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम से लाडो लक्ष्मी योजना के तहत पंजीकृत महिलाओं को एक नवंबर से योजना का लाभ दिया जाना शुरू कर दिया गया है। इस दौरान स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की ओर से अपने उत्पादों की स्टॉल भी लगाई गई। एडीसी राहुल मोदी ने बताया कि हरियाणा सरकार की ओर से महिलाओं को आर्थिक मदद देने और आत्मनिर्भर बनाने के लिए दीन दयाल लाडो लक्ष्मी योजना शुरू की है, जिसके तहत 23 साल से अधिक आयु की महिलाओं को 2100 रुपये हर महीने आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। महिला कम से कम 15 वर्ष से हरियाणा की निवासी होनी चाहिए। इसके अलावा परिवार की आय एक लाख रुपए वार्षिक होनी चाहिए।



हरियाणा दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

रेवाड़ी। हरियाणा दिवस पर सोमानी कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट के कॉलेज समानार में कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर जगदीश सिंह दिल्ली ने प्रदेशवासियों व युवा शक्ति को प्रदेश के विकास में अपना अभिन्न योगदान देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज की तर्ज पर स्वतंत्रता सेनानी स्व. आरडी सोमानी ने हरियाणा में शिक्षा की जो ज्योति जगाई, उसे सोमानी परिवार लगातार आगे बढ़ा रहा है। सोमानी कॉलेज, पहली मई 1999 से लगातार तकनीकी शिक्षा प्रदान कर प्रतिवर्ष 1500 से 1600 युवाओं के भविष्य को संवार रहा है। कॉलेज प्रबंधक की इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका है। युवाओं को समाज में अपना रचनात्मक योगदान देते हुए रोजगार के अच्छे अवसर प्राप्त कर अपना जीवन सुखद बनाया होगा। कार्यक्रम में प्रोफेसर आरती व प्रोफेसर सोमन सहित कॉलेज स्टाफ सदस्य मौजूद थे।



हरियाणा भारत के प्रगतिशील राज्यों में से एक



कोसली। कोसली के विधायक अनिल यादव ने कहा कि हरियाणा भारत के प्रगतिशील राज्यों में से एक है। आज पूरे प्रदेश में हरियाणा दिवस धूमधाम से मनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री नाथ सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा तेजी से उज्ज्वल की ओर अग्रसर है। विधायक ने शनिवार को अनाज मंडी स्थित अपने कार्यालय में क्षेत्रवासियों को 60वें हरियाणा दिवस की बधाई दी। आज ही के दिन एक नवंबर, 1989 को रेवाड़ी जिला की स्थापना हुई थी। दक्षिण हरियाणा की वीर भूमि के इस सुप्रसिद्ध जिले का कार्फो ऐतिहासिक महत्व रहा है। आज हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम सभी कोसली हल्कावासी अपने जिले और प्रदेश के चहुँमुखी विकास में अपना योगदान दें। इस मौके पर कोसली मार्केट कमेटी के चेयरमैन महेश यादव, कपिल चेयरमैन, जिला पार्षद शारदा, जिला पार्षद जीवन हितैषी व उद्यमान डाक्टर सहित अनेक पंचायत प्रतिनिधि मौजूद थे।

दौड़ प्रतियोगिता में उज्जापुर का हिमांशु बना विजेता



कोसली। हरियाणा दिवस के अवसर पर गांव रतनथल में शनिवार को सम्राट पृथ्वीराज चौहान खेल स्टेडियम में युवाओं की दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें रतनथल व आसापास के गांव उज्जापुर, कन्होरा, बहरामपुर, सुरखपुर, गादला, मुंदडा, हांसावास व शादीपुर के युवाओं ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि कोसली के एसडीएम विजय कुमार यादव ने किया। प्रतियोगिता में उज्जापुर गांव के हिमांशु ने प्रथम, रतनथल के राहुल ने द्वितीय तथा कन्होरा गांव के सचिन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर दलसिंह आर्य, कैप्टन राजेश कुमार, नरेश चौहान, कुशल पाल चौहान, कृष्ण चौहान, प्रेम कुमार, बनारसी यादव, गणेश यादव, सुबेदार प्रताप सिंह तंवर, रतनथल बास गांव के सरपंच गोविंद यादव व रतनथल गांव के सरपंच सुभाष चौहान सहित अनेक ग्रामीण मौजूद थे।

आरपीएस स्कूल में हर्षोल्लास से मनाया हरियाणा दिवस

कोसली। आरपीएस स्कूल कोसली में शनिवार को हरियाणा दिवस उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर आरपीएस गुप की चेयरपर्सन पवित्रा राव, साईंजी मनीष राव, डिप्टी साईंजी कुणाल राव व कोसली स्कूल के निदेशक हंसराज यादव ने सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को हरियाणा दिवस की शुभकामनाएं दीं तथा बच्चों को हमेशा सकारात्मक सोचने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में वे क्या अछू कर सकते हैं और उसकी दिशा में मेहनत और लगन से काम करें। इस मौके पर छात्रों ने हरियाणा की समृद्ध संस्कृति, लोकगीतों और लोकनृत्यों की मनमोहक प्रस्तुति दी। विद्यार्थियों ने हरियाणा के इतिहास, प्रसिद्ध व्यक्तित्वों और राज्य की उपलब्धियों पर भाषण और कविताएं भी पेश कीं। विद्यालय की प्राचार्या अंजू यादव ने कहा कि हरियाणा हमारे देश का गौरवशाली राज्य है, जिसमें खेल, शिक्षा, कृषि और रक्षा क्षेत्र में देश का नाम रोशन किया है। हमें अपने राज्य की संस्कृति और परंपराओं पर गर्व होना चाहिए। राज्य गीत जय जय हरियाणा के साथ समारोह का समापन किया गया। इस अवसर पर समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।



हरियाणावी संस्कृति की झलक दिखाई

रेवाड़ी। विवेकानंद पब्लिक स्कूल लाखनौर में हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने हरियाणावी बोली में भाषण व कविताओं के माध्यम से हरियाणा के गौरवशाली इतिहास व संस्कृति पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विद्यालय में लगी प्रदर्शनी में हरियाणावी कल्चर की झलक दिखाई दी, जिसमें छात्र, छात्रा, बिलोनी, खुरपा, करसी, दरती, हुक्का व मिट्टी का कूहा सहित हरियाणावी खान-पान देखने को मिला। कक्षा सातवीं व आठवीं के छात्रों ने हरियाणावी वेशभूषा में प्रस्तुति दी तो कक्षा 11वीं की छात्राओं ने दामन पहनकर हरियाणावी नृत्य प्रस्तुत किया। इस मौके पर प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को विद्यालय प्रबंधक की ओर से पुरस्कार प्रदान किए गए। इस मौके पर स्कूल के निदेशक एडवोकेट सुधीर यादव सभी को हरियाणा दिवस की शुभकामनाएं दीं। आज ही के दिन रेवाड़ी को भी जिले के दर्जा दिया गया और इसे हरियाणा का 17वां जिला घोषित किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों के साथ हरियाणा के समस्त जिलों से जुड़ी विशेष जानकारी भी साझा की व सभी को प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।



सैनिक स्कूल में अंतरसदनीय अंग्रेजी कथा वाचन, वक्तृत्व कला एवं काव्य पाठ प्रतियोगिता आयोजित

अंग्रेजी वक्तृत्व कला प्रतियोगिता में कारगिल सदन की कैडेट भावना रही प्रथम

निर्णायकों ने युवा प्रतिभागियों द्वारा प्रदर्शित स्पष्टता, आत्मविश्वास और प्रतिभा की प्रशंसा की

हरिभूमि न्यूज >>> रेवाड़ी



रेवाड़ी। प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थी प्राचार्य व शिक्षकों के साथ। फोटो: हरिभूमि

गोठड़ा अहीर स्थित सैनिक स्कूल में कनिष्ठतम समूह 'स' यानि कक्षा छठी की अंतरसदनीय अंग्रेजी कथा वाचन, वक्तृत्व कला व काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें कारगिल व रेजांगला सदन के कैडेट्स ने भाग लिया। सभी वरिष्ठ सदनों के विभाजन

अनुरूप कथा वाचन, वक्तृत्व कला व काव्य पाठ के लिए अलग-अलग विषय रखे गए। भाषण प्रतियोगिता के लिए विषय स्वच्छ भारत, जीवन में मेरा आदर्श, सुबह जल्दी उठना, नेतृत्व के लिए तैयार-मेरी नई

प्रतियोगिता के परिणाम

अंग्रेजी वक्तृत्व कला प्रतियोगिता में कारगिल सदन की कैडेट भावना ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि कैडेट यश कारगिल सदन ने द्वितीय व कैडेट राम रेजांगला सदन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंग्रेजी कथा वाचन प्रतियोगिता में रेजांगला सदन के कैडेट दक्ष ने प्रथम, कारगिलसदन के कैडेट आर्युष येवले ने द्वितीय व कारगिल सदन के कैडेट आर्युष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंग्रेजी काव्य पाठ प्रतियोगिता में कैडेट अभिनव कारगिल सदन पहला, कैडेट विक्रमादित्य रेजांगला सदन ने दूसरा तथा कैडेट भूमित रेजांगला सदन ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के समापन परिणाम के आधार पर कारगिल सदन विजेता व रेजांगला सदन उपविजेता रहा।

स्क्वाइन लीडर वंदना चौधरी विद्यालय वरिष्ठ अध्यापक गर्जेंद्र सिंह चौहान भी मौजूद थे। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका के रूप में मनोज कुमार

छात्रों को पुस्तकें व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया

इस मौके पर विद्यालय प्राचार्य कैप्टन बिज किशोर ने कहा कि नवानुक्त कक्षाओं के छात्रों ने आत्मविश्वास और रचनात्मकता के साथ अपनी कविताएं सुनाईं। प्रत्येक प्रस्तुति में सशक्त अभिव्यक्ति और भावपूर्ण भावनाएं झलकीं। उन्होंने कहा कि बदलते वैश्विक परिवेश में प्रगति के लिए वैश्विक भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है। इसलिए विद्यालय द्वारा समय-समय पर इस प्रकार की गतिविधियां एवं कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिससे कैडेट्स का सर्वांगीण विकास हो सके। उन्होंने विजेता छात्रों को पुस्तकें व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम छात्र प्रमारी कैडेट हिमांशु थे, वहीं पंच संचालन कैडेट हर्ष दायमा और सक्षम गुप्ता ने किया। प्रतियोगिता समापन प्रमारी आंचल कुमारी टीजीटी अंग्रेजी रही।

प्रस्तुति से निर्णायकों को प्रभावित किया। निर्णायकों ने युवा प्रतिभागियों द्वारा प्रदर्शित स्पष्टता, आत्मविश्वास और प्रतिभा की प्रशंसा की।

कुछ शब्दों तक सिमटी किशोर-युवाओं की बातचीत



कवर स्टोरी

लोकप्रिय गीतग

एक जमाना था, जब संयुक्त परिवारों में रहने वाले बच्चे किशोरावस्था में ही ऐसे मुहावरों और कहावतों दोहराने लगते थे, जो आज के किशोरों के मुंह से सुनने को मिलें तो निश्चित रूप से आश्चर्य हो- जैसे कि 'नहले पे दहला' और 'सौ सुनार की एक लुहार की'। ये कहावतें या मुहावरें अभी एक-डेढ़ दशक पहले तक किशोरों के मुंह से सुनना आश्चर्य की बात नहीं होती थी। लेकिन अगर आज की बात करें तो किशोरों के पास अंग्रेजी के कुछ गिने-चुने शब्द ही होते हैं, जिन्हें वे आपसी संवाद के दौरान अक्सर दोहराते रहते हैं। मसलन- 'ओके, रियली, यू नो, वाव और ट्रस्ट मी।' जैसे बमुश्किल एक दर्जन अंग्रेजी के शब्द हैं, जो विशेषकर आज के शहरी बच्चे अक्सर आपस में बातचीत के दौरान दोहराते रहते हैं।

मातृभाषा से बढ़ती दूरी: आज पूरे भारत में सभी क्षेत्रों की मातृभाषाओं पर यह संकट देखने को मिल रहा है। आज चाहे दक्षिण भारत हो या उत्तर, मध्य हो या पश्चिम। शहरी क्षेत्र में कहीं भी बच्चे खासकर किशोर और युवा अपनी मातृभाषा के मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों के इस्तेमाल में जरा भी सहज नहीं दिखते हैं।

आजकल के किशोर और नौजवान बात-बात में 'ब्रो', 'टैट्स', 'लिट' और 'रियली यार' जैसे अंग्रेजी के शब्द तो बार-बार दोहराते हैं, लेकिन उनकी रोजमर्रा की जुबान में खांटी मातृभाषा के शब्द ढूँढ़े नहीं मिलते। वास्तव में हमारी नई पीढ़ी की वोकेबलरी किसी भाषायी विकास को नहीं बल्कि दिनों-दिन बढ़ रही सांस्कृतिक दूरी की कहानी कहती है और यह दूरी उस समय से बढ़नी शुरू हुई है, जब हम सदियों की अपनी गुलाम मानसिकता के मनोवैज्ञानिक दबाव में अपनी मातृभाषा को अंग्रेजी के सामने दरिद्र मान लेते हैं और इसी भावना के चलते अपनी रोजमर्रा की बातचीत में टूटे-फूटे अंग्रेजी के शब्द बार-बार दोहराकर अपने

को मॉडर्न दिखाने की कोशिश करते हैं।
मोबाइल की लत का असर: आजकल घरों में मां-बाप के साथ बोलनी जाने वाली मातृभाषा को किशोर और युवा आपस में बोलना ओल्ड फैशन समझते हैं। इसलिए वे हर जगह अंग्रेजी के कुछ शब्दों से काम चलाते रहते हैं। सोशल मीडिया ने विशेषकर

मोबाइल की लत लगने के बाद इस आदत को और पक्का बना दिया है। वास्तव में सोशल मीडिया का कुछ वैश्विक प्रभाव नई पीढ़ी पर इस कदर पड़ा है कि अंग्रेजी के शब्द अपनी रोजमर्रा की बातचीत में बोलना ग्लैमर लगने लगा है। जबकि हम सब जानते हैं कि ये बहुतायत में इस्तेमाल हो रहे अंग्रेजी के टूटे-फूटे शब्द अपनी अभिव्यक्ति में किसी तरह की भावना नहीं जगाते बल्कि बस स्टाइल बनकर रह गए हैं।

भावात्मक गहराई से बढ़ती दूरी: अभी एक-डेढ़ दशक पहले तक बातचीत में इस्तेमाल होने वाली कोई एक

कहावत या कोई एक देसी मुहावरा हमारे दुखी और परेशान मन की सारी कहानी कह देता था। लेकिन आज बस 'मूड ऑफ' कह देने भर से काम चल जाता है। वास्तव में यह चेतना है कि अगर हम जल्दी चेत नहीं, तो हमारी मजबूत अभिव्यक्ति के देसी शब्द खो जाएंगे, तब हमें कहना ही नहीं, किसी के कहे हुए को समझना भी आसान नहीं होगा। आज सिर्फ कॉलेज, सोशल मीडिया में ही नहीं, दफ्तरों में भी लोगों के बीच अक्सर अंगुलियों में गिने जाने वाले कुछ शब्दों से पूरी बातचीत कर लेने की कोशिश देखी जाती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चाहे सोशल मीडिया हो, चाहे लोगों के बीच निजी संवाद हो या सार्वजनिक बतकही ही क्यों न हो? बस थोड़े से ही शब्द हमारे इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। आजकल बातचीत में जरा भी ठहराव या भावनाओं की गहराई देखने को नहीं मिलती। 'टू द प्वाइंट'

घर, ऑफिस, कॉलेज हो या कोई पार्टी जहां कहीं भी किशोर या युवा आपस में बातचीत करते हैं, तो अधिकतर अंग्रेजी के कुछ शब्दों तक ही सिमटे रहते हैं। मातृभाषा संस्कार और क्षेत्रीयता का सौधापन उसमें से नदारद रहता है। नई तकनीकी का हस्तक्षेप, विदेशी जीवनशैली और आधुनिकता के अधानुकरण जैसी कई वजहें इसके लिए जिम्मेदार हैं। इससे जुड़े तमाम पहलुओं पर एक नजर।

कहकर लोग तेजी से सतहीपन को सही ठहराने की कोशिश करते रहते हैं।

एक जमाना था, जब लोग आपस में बातचीत में रुचि लेते थे, लेकिन आज तो बस 'रिप्लाई' करते हैं। वास्तव में यह फर्क भाषा के विकास का नहीं, मातृभाषा से बढ़ी हुई दूरी का परिचायक है। आज के किशोरों और हाल में जवान हुए कितने युवाओं के मुंह से आपने 'घर की मुर्गी दाल बराबर' या 'नाच न आवे आंगन टेढ़ा' जैसे मुहावरें-लोकोक्तियां सुनी हैं? जबकि एक-डेढ़ दशक पहले युवाओं के बीच इस तरह के मुहावरें बातचीत का हिस्सा होते थे। ये शब्द या ये मुहावरें, खालिस बातचीत नहीं होते, ये हमारे बाप-दादाओं की संस्कृति को हम तक पहुंचाने का जरिया होते हैं, जो अब लगातार खत्म हो रहे हैं। आज के युवा और किशोर अगर ये शब्द, शब्दालियां, मुहावरें तथा कहावतों से दूर हैं, तो यह दूरी यहीं तक सीमित नहीं है। इनकी यह दूरी लगातार अपनी विरासत, संस्कृति और मातृभाषा से भी हो रही है। आज की पीढ़ी 'टेकन फॉर ग्रांटेड', 'कर्मा हिट्स बैक' या 'टैट्स हाउ इट वक्स' जैसे विदेशी वाक्य दोहराती है, जो कि निरा कोरे शब्द होते हैं। इनमें जरा भी भावनात्मक गहराई देखने को नहीं मिलती।

शॉर्टकट्स-इमोजी का बढ़ा ट्रेंड: वास्तव में मोबाइल और इंटरनेट ने संवाद को 'फास्ट फूड' में बदल दिया है। जल्दी लिखो, जल्दी भेजो, जल्दी भूलो, यही सब देखने को मिल रहा है। अब लोग 'थैंक यू' भी पूरा नहीं लिखते बल्कि 'टीएचएक्स' लिखकर काम चलाना चाहते हैं। 'क्या हाल है' की जगह अब नई पीढ़ी सिर्फ 'एसयूपी' लिखकर अपने को कूल समझती है। वास्तव में नई पीढ़ी अब इस कदर शॉर्टकट की भाषा बोल रही है कि वह अपनी आधी से ज्यादा अभिव्यक्तियों को इमोजियों के हवाले कर देती है और उनके विचार तो बस स्टैटस अपडेट तक सीमित होकर रह गए हैं। यही वजह है कि आज युवा पीढ़ी में भाषा का अभ्यास और शब्दों की संवेदना दोनों का ही घोर अभाव दिखता है।

हमारे युवाओं और किशोरों की यह नई शब्दबली, परिवार और लोक-संस्कृति के छीजने का भी परिणाम है। इसलिए हमें बहुत जल्दी सचेत हो जाना चाहिए और यह दोहरा लेना चाहिए कि भाषा का पतन शब्दों का पतन नहीं, विचारों का पतन होता है। इसलिए जितना जल्दी हो, हमें अपनी संस्कृति और सभ्यता को अगर जीवंत बनाए रखना है, तो अपनी मातृभाषा को समृद्ध बनाना होगा, सिर्फ पढ़ने के मामले में ही नहीं बल्कि रोजमर्रा के संवाद में भी। *



जीवन की सांझ में पैरेंट्स महसूस ना करें अकेलापन

दार्पित / डॉ. मोनिका शर्मा

हाल ही में दिल्ली के एक युवक की इमोशनल पोस्ट सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई। इस पोस्ट में लिखा गया था कि वह देर रात 3:30 बजे अस्पताल के बाहर अपनी कार में बैठा है और लगभग 36 घंटे से सोया नहीं है। उसके पिता को दिल का दौरा पड़ा है। वह हालात को संभालने की कोशिश कर रहा है। उसे यह भी अफसोस है कि वह नौकरी के कारण परिवार से दूर हो गया है। अपने माता-पिता के साथ समय नहीं बिता पाया। माता-पिता को वक्त नहीं दे पाया। एक बेटा होने में असफल रहा। युवक ने पिता को हार्ट अटैक आने के बाद दुखी मन से बाद खुद को 'नाकाम बेटा' बताया। असल में बीमारी से जूझते पिता को देखे लिखे गई भावुक बातों वाली यह पोस्ट कितने ही युवाओं के लिए थोड़ा ठहरकर सोचने की बात लिए है। ये शब्द अपनों के साथ वक्त बिताने की अहमियत समझाते हैं। समय रहते अपने माता-पिता को समय देने की एक मानवीय चेतावनी सी लिए हैं।

फिजिकल रूप से अकेलेपन को झेलना इंसान के लिए तकलीफदेह होता है। उपद्राज लोगों के मामले में तो यह बहुत बड़ी समस्या बन गई है। अपराधबोध तले दबता मन: यह सच है कि आज के समय में करियर बनाने और जरूरतें जुटाने में लगे युवाओं की मुश्किलें भी कम नहीं हैं। आज के कट थ्रॉट कॉर्पोरेटिशन में डटे रहना कुछ भी सोचने का समय नहीं देता। अपनों को भी याद करने का वक्त नहीं मिलता। इन हालातों में मन अपराधबोध का भी शिकार बनता है। नेशनल अलायंस फॉर केयर गिविंग और एएआरपी की रिपोर्ट के मुताबिक 47 प्रतिशत लोग अपने माता-पिता की चिंता में भावनात्मक रूप से टूटने लगते हैं। बड़ों के अकेले पड़ जाने की पीड़ा को बच्चों का मन भी समझता है। लेकिन काम-काजी मजबूरियों के कारण पैरेंट्स से दूर रहने वाले लोग भी जानते हैं कि उनके माता-पिता को उनकी देखभाल की जरूरत है। ऐसे में ठहराव की राह खुद ही चुननी होगी।

आपा-धापी में अपने अहसासों को बचाने के लिए युवाओं को एक संतुलन तो साधना होगा। देर ना हो जाए: अपने बुजुर्ग पैरेंट्स से जुड़े



रहने के मोर्चे पर समय की टिक-टिक को सुनना भी जरूरी है। वक्त निकल जाने के बाद कुछ नहीं किया जा सकता। जिंदगी भर के लिए एक कसक मन में रह जाती है। देखा जाए तो यह एक रिश्ते को निभाने की बात भर नहीं। उपद्राज माता-पिता की देखभाल एक मानवीय जिम्मेदारी भी है। सो दूर बैठे केवल महंगे मोल वाली चीजें भेजकर मन को तसल्ली देने के रास्ते ना निकालें। ना भूलें, जीवन की सांझ में अपने बच्चों के इमोशनल सपोर्ट की बुजुर्ग अभिभावकों को सबसे ज्यादा जरूरत होती है। इसलिए जितना अधिक संभव हो, उनके साथ वक्त गुजारें, उनका ध्यान रखें। *

आत्मचिंतन / रहिम वैभव गर्ग

अभिव्यक्ति का सहज माध्यम है- शब्द। लेखन हो या जीवन शब्दों से ही अभिव्यक्त होता है। शब्दों की यात्रा ही, जीवन को गतिशील बनाए रखती है। शब्द न होते तो हम मौन को भी परिभाषित नहीं कर पाते। शब्दों की ध्वनि ही जीवन को गुंजायमान रखती है। शब्दों का अर्थ के साथ, लहजा भी हमारे भावों को दर्शाता है। वास्तव में अभिव्यक्ति के दो ही माध्यम हैं। एक तो शब्द, दूसरा भाव। शब्दों का संसार तो विस्तृत है ही, लेकिन शब्दों से परे भी एक दुनिया होती है, वो है मौन। मौन, वो भी व्यक्त कर देता है, जो शब्द भी व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

अव्यक्त को करता है व्यक्त: मौन एक साधना है। इसके विविध रूप हैं। मौन कभी शब्दों का विराम है तो कभी भावों की गहन अभिव्यक्ति है। कभी मौन रोष अभिव्यक्त करता है, तो कभी आशा प्रेम की अभिव्यक्ति। मौन कभी शब्दों की विवशता भी प्रकट करता है। कभी-कभी शब्द

हमारी अनुभूति को व्यक्त ही नहीं कर पाते, उसे मौन व्यक्त कर देता है। शब्द, भावों की गूंज है तो मौन भावों की मूक अभिव्यक्ति है। किसी ने क्या खूब कहा है कि स्पीच इज सिक्वर, साइलेंस इज गोल्ड। सचमुच बोलना चांदी के समान है तो चुप रहना स्वर्ण के तुल्य। कभी ऐसा भी होता कि हम कुछ बोलना चाहते हैं, लेकिन किसी कारणवश बोल नहीं पाते हैं, फिर सोचते हैं कि न बोलना ही



अपनी बात और भावनाएं दूसरों तक पहुंचाने के लिए शब्दों की जरूरत पड़ती है। लेकिन शब्दों से भी गहन अभिव्यक्ति मौन की होती है। मौन से हमें अंतस की भी सहज अनुभूति हो जाती है।

आत्मनुभूति का द्वार मौन

श्रेयस्कर रहा।
आत्मसंयम का परिचायक: मौन, अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम माध्यम है। बशर्तें कोई समझने वाला हो। सामाजिक जीवन में संवादरहित अभिव्यक्ति एक गहरा प्रभाव छोड़ती है। चुप रहना भी एक विजय है। अपने शब्दों को विराम देना एक आत्मसंयम है। इस आत्मसंयम को आत्मसात करना हमारी जीत है। बाहरी मौन का संयम रखते हुए, आंतरिक मौन साधना को पाना जीवन दर्शन है। बाहरी मौन जीवन का आनंद है, आंतरिक मौन आत्मा का आनंद है। शब्दों का मौन लौकिक रंग है, आंतरिक मौन, आलौकिक रंग है, क्योंकि

मौन यानी सब इच्छाओं की समाप्ति। जो अत्यंत लुच्छर है, लेकिन दुरुह नहीं। आंतरिक मौन जीवन को पूर्ण कर देता है। उतना ही पूर्ण जितना ईश्वर। तृष्णाओं की समाप्ति ही ईश्वर से मिलने का द्वार खोलती है। स्वयं से साक्षात्कार ही ईश्वर से मिलना है, वो तब ही संभव है, जब हम बाहरी व्यक्ति और वस्तुओं को विराम दें, और आंतरिक मौन को धारण करें।
मिलता है आलौकिक आनंद: हर इंसान के अंदर आध्यात्मिक अनुभूति होती है। जैसे पानी में कंकड़ फेंकते हैं तो लहर उठती है, वैसे ही हर आत्मा में अध्यात्म की चेतना होती है, क्योंकि

चेतन का स्वभाव ही आत्मतत्व की खोज है। जिसका क्षणिक आभास हम जब-तब करते रहते हैं, लेकिन जब यह आत्मतत्व चिरस्थायी हो जाता है, तो असल आनंद प्राप्त होता है। बाहरी क्रियाएं विचलित करती हैं। आंतरिक मौन, लोक में रहकर आलौकिक सुख प्रदान करता है। स्वयं से स्वयं को ढूँढ़ना ही आंतरिक मौन है। वहीं ईश्वर से साक्षात्कार है। आत्मा में ही परमात्मा का वास होता है। आंतरिक मौन सृष्टि का अनहद नाद है, जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। संसार में रहकर संसार से विरक्ति सबसे कठिन कार्य है। आसक्तियों ही सांसारिक कार्यों को फलीभूत करवाती हैं। जीवन का द्वैत ही यही है कि यदि अध्यात्म को अपनाते हैं तो कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं और कर्तव्यों का निर्वाह, बिना आसक्तियों के होता ही नहीं। इसी झंझावात में जीवन-यापन हो जाता है।

चेतन का स्वभाव ही आत्मतत्व की खोज है। जिसका क्षणिक आभास हम जब-तब करते रहते हैं, लेकिन जब यह आत्मतत्व चिरस्थायी हो जाता है, तो असल आनंद प्राप्त होता है। बाहरी क्रियाएं विचलित करती हैं। आंतरिक मौन, लोक में रहकर आलौकिक सुख प्रदान करता है। स्वयं से स्वयं को ढूँढ़ना ही आंतरिक मौन है। वहीं ईश्वर से साक्षात्कार है। आत्मा में ही परमात्मा का वास होता है। आंतरिक मौन सृष्टि का अनहद नाद है, जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। संसार में रहकर संसार से विरक्ति सबसे कठिन कार्य है। आसक्तियों ही सांसारिक कार्यों को फलीभूत करवाती हैं। जीवन का द्वैत ही यही है कि यदि अध्यात्म को अपनाते हैं तो कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं और कर्तव्यों का निर्वाह, बिना आसक्तियों के होता ही नहीं। इसी झंझावात में जीवन-यापन हो जाता है।

वास्तविकता यही है कि हम दो दुनिया में जीते हैं। बाहरी दुनिया जो कर्मशील दुनिया है, जहां हम अपना किरदार निभाने के लिए बाध्य हैं। वो हमें थोड़ी आसक्ति भी देती है। आसक्त होना लाजिमी ही है, क्योंकि वही हमें कर्मशील बनाता है। दूसरी दुनिया है आत्मा का आनंद, जिसे हम स्वयं के भीतर अनुभव कर सकते हैं। ये हमारी अपनी खोज है, अपनी पूंजी है। इसे हम ही प्राप्त कर सकते हैं और इसे कोई हमसे छीन भी नहीं सकता। बाहरी क्रियाकलापों

का विराम ही आंतरिक मौन है। बाहर किताना ही शोर हो यदि आंतरिक शांति है तो आप हर जगह विजयी होंगे। कहने का सार यही है कि अपने जीवन की सांसारिक यात्रा के विभिन्न पड़ावों को पूरा करते हुए भी अंतिम ध्येय अंतस का मौन ही होना चाहिए। *

छोटी कहानी / सविता गोयल

यह क्या भैया! ना आपने सारे नाते-रिश्तेदारों को न्यौता दिया और ना ही भोज का आयोजन सही तरीके से किया। समाज में क्या इज्जत रह जाएगी हमारी! अरे पैसे कम पड़ रहे थे तो एक बार बोल दिया होता हमसे। मैं ही कुछ इंतजाम कर देता। पापा की तेरहवीं पर मेरे ससुरजी भी आने वाले हैं। वो क्या सोचेंगे, उनके दामाद ने अपने पिता की तेरहवीं भी हंग से नहीं की। आप सबको तो पता ही है, वो कितने बड़े आदमी हैं। मेरी क्या इज्जत रह जाएगी उनके सामने? कमल का छोटा भाई विमल अपनी ही रौब में बोलता जा रहा था।

मनोहरजी को गुजरे आज ग्यारह दिन हो गए थे। पिछले दो साल से वह बहुत पीड़ा में थे। कैसर की बीमारी में एक-एक दिन सालों की तरह गुजर रहे थे। उनका बड़ा बेटा कमल और बहू मीना ने अपने पिता की सेवा और इलाज में अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी। किराने की दुकान में कोई ज्यादा कमाई नहीं थी, लेकिन जितना बन पड़ा, उसमें उन्होंने कभी अपना हाथ पीछे नहीं खींचा। कमल अपने माता-पिता के साथ ही रहता था। छोटा बेटा विमल जब से पढ़-लिखकर भी इंजीनियर बनकर शहर में बसा, कभी पलट कर वह घर नहीं आया। नौकरी अच्छी थी तो बड़े घर की लड़की का रिश्ता भी आ गया था। अब तो विमल के और भी पंख लग गए थे।



तृप्ति

जहां आर्थिक रूप से कमजोर बड़े बेटे कमल ने कैसर से पीड़ित पिता के इलाज में कोई कसर नहीं छोड़ी, वहीं छोटे बेटे विमल ने अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़े रखा। पिता के देहांत के बाद उनकी तेरहवीं में विमल ने जैसा दिखावा चाहा, वह अपमानजनक था। एक मर्मस्पर्शी कथा।

पिता की बीमारी का पता होने के बाद भी कभी उसने उनके इलाज और देखभाल में बड़े भाई का हाथ नहीं बंटया। एक बार कांता देवी ने विमल से कहा भी, 'बेटा, कमल का हाथ थोड़ा तंग रहता है, ऊपर से तेरे पिताजी की बीमारी पर बहुत पैसा खर्च हो रहा है। तुम थोड़ी मदद कर दोगे तो उसे थोड़ी राहत मिलेगी।' इस पर विमल का जवाब था, 'मां, आपको क्या पता, मेरी कमाई से ज्यादा तो मेरा खर्च है। आप लोग तो यहां पुरतैनी मकान में रहते हैं। लेकिन मुझे तो हर महीने फ्लैट का किराया भी देना पड़ता है। आगे मेरा परिवार भी बढ़ रहा है तो खर्च भी बढ़ रहे हैं फिर इस बीमारी का क्या पता ठीक हो ना हो! बेकार में लुटने-पिटने से क्या फायदा?'

रखता। तृप्तिना कर रहा है, वह बहुत है। तेरे पिताजी की आत्मा तो तेरी सेवा से ही तृप्त हो गई है बेटा। बस पांच ब्राह्मणों को भोजन करा दे और अपने पिता का तर्पण कर दे। फिर कांता देवी अपने छोटे बेटे विमल के मुखातिब होते हुए बोली, 'आज तुझे यहां सारे कामों में जो कमी नजर आ रही है, वह उस समय क्यों नजर नहीं आई, जब तेरे पिताजी बीमारी से तड़प रहे थे और तेरा यह भाई तंगी से जूझते हुए भी रोज उन्हें लेकर अस्पताल के चक्कर लगा रहा था। उसे अपने दिन का चैन और रातों की नींद की भी परवाह नहीं थी। उस समय तो तेरे मुंह से एक बार भी नहीं निकला कि भैया, पिताजी के इलाज में मैं कुछ मदद कर दूं। उस वक्त तुझे यहां अपने पास रख, पता नहीं कब तुझे इनकी जरूरत पड़ जाए। मां हूँ, इसलिए कभी अपने दिल और जुबान से तेरा बुरा नहीं सोचूंगी, लेकिन बेटा जब तेरे बच्चे अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ेंगे तब तुझे अपने मां-बाप का दर्द समझ में आएगा।'

यह सुनकर विमल का सिर झुक गया। उसे अपनी मां और भाई से नजरें मिलाने की हिम्मत भी नहीं हो रही थी। कमल ने अपने सामर्थ्य अनुसार अपने पिता का तर्पण और भोज कराया। कांता देवी के चेहरे पर आज संतुष्टि के भाव थे। उन्हें विश्वास था कि उनके पति तृप्त होकर इस दुनिया से विदा हुए हैं। *

पुस्तक रचा / विज्ञान भूषण

देश की स्वर्णाभा नरेंद्र मोदी

आजादी के बाद देश के विकास और इसे सशक्त बनाने में भारत के सभी प्रधानमंत्रियों की भूमिका रही है। इसी क्रम में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अब तक के अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व कार्य किए हैं और इस दिशा में निरंतर प्रयासरत भी हैं। फिर वो चाहे विश्व में भारतवर्ष की प्रतिष्ठा बढ़ाने की बात हो, कश्मीर से धारा 370 हटाने का ऐतिहासिक कदम हो, कोरोना काल का मजबूती से सामना करना रहा हो, महिलाओं और गरीबों के सशक्तिकरण के लिए किए गए प्रयास हों या आतंकी गतिविधियों का मुंहतोड़ जवाब देना हो। इस पुस्तक में उनके ऐसे तमाम प्रयासों की विस्तार से चर्चा की गई है। इसमें लेखक ने नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व के कई पहलुओं को भी उजागर किया है। *

पुस्तक: भारतवर्ष की स्वर्णाभा नरेंद्र मोदी, लेखक: प्रोफेसर (डॉक्टर) रमेश चंद्र तोमर, मूल्य: 600 रुपये, प्रकाशक: प्रभात प्रकाशन, आसफ ली रोड, नई दिल्ली

सूनी-सी दहलीज

सूना घर का आंगना, सूनी-सी दहलीज। भूख, गरीबी वो चुकी, घर गरीब के बीज। जैसे को तैसा मिले, खे ल्गलावर परत। वह भी फिर आरवस्त-सा, रम भी फिर आरवस्त। बदल रही है जिंदगी, बदल रहा है दौर। निराश्रित नई चुनौतियां, हर पल करिए गौर। पांव कुल्लाईं गार ली, गण संभलना भूल। गद्दा आया सामने, काहे गिरे किजुल। गीता, रामायण बीज, बांधे देव, कुरान। ठे न सका इसी तन, एक अद्रद इंसान। भरी भीड़ में रम रुप, बहुत अक्रेले आज। अपनेपन का बांधते, किसके सिर पर ताज। यदि कुपाय को धन दिया, धन ठेगा बेकार। ज्यादा खाकर वस्तुएं, जैसे तन बीमार। वाटर एटीएम लें, सूखे सारे कूप। परिवर्तन का मोहरा, खड़ा बदलकर रूप। फिसला करती लथ से, पाई कोई चीज। लोते हैं संसार में, ऐसे कुछ नाथीज। भले विवेकानंद हों, श्रधवा गौतम बुद्ध। कर्तव्यों से ही लड़े, अधिकारों के युद्ध।





अमल करने से ही बनेगी बात

स्मार्टफोन के स्क्रीन से हर पल प्रेरणादायक विचारों की बौछार होती रहती है। लोग इसमें रुचि भी खूब लेते हैं। लेकिन अगर आप स्वयं में सकारात्मक बदलाव देखना चाहते हैं तो सिर्फ मोटिवेशनल कंटेंट देखना नहीं, उस पर अमल भी करना होगा।

सेल्फ मोटिवेशन / चैतन्य

इन दिनों सोशल मीडिया पर भी मोटिवेशनल वीडियो की भरमार है। ज्ञान फैलाने के लिए बाकायदा एप्स बने हुए हैं। मन-मस्तिष्क को मोटिवेशन देने वाले शब्द लिखित हैं या मौखिक, किसी ना किसी रूप में हर पल सामने आते रहते हैं। जीवन को साधने वाले इस कंटेंट को यूजर्स द्वारा खूब देखा-सुना भी जाता है। बावजूद इसके व्यावहारिक धरातल पर जनमानस में इसका असर नहीं दिखता। आंतरिक या बाहरी शक्ति जगाने को सुने गए विचार आत्मसात नहीं किए जा रहे हैं। इनसे प्रेरणा पाकर जन-जीवन में बदलाव लाने के भावों को बल नहीं मिल रहा।



आचरण और जीवनशैली से शिक्षाओं के जीवन को दिशा और प्रेरणा देते हैं। स्पष्ट है कि इसी के चलते सिद्ध पुरुषों के विचार ही जीवन में फलित होते हैं। सोशल मीडिया पर तैरते मोटिवेशनल आख्यानों में प्रेरणा देने की बातें भर हैं। इन बातों को कहने-समझाने वालों का अपना जीवन लोगों को प्रभावित करने वाला नहीं है। इतना ही नहीं शेर कर आगे बढ़ाने की तकनीकी सहूलियत से हर कोई यह ज्ञान किसी दूसरे व्यक्ति तक तो पहुंचा रहा है पर अपने कर्मों में नहीं उतार रहा। बहुत से इंफ्लुएंसर तो प्रेरणादायी शब्दों को अपनी मार्केटिंग माध्यम बना चुके हैं। वहीं आत्म-विकास हो या आंतरिक शांति गुरुओं का जीवन ही सहज ढंग से व्यक्ति को नैतिक मार्गदर्शन देता है। जीवन को संवारने की सच्ची शिक्षा ही नहीं मिलती, उन उपदेशों से मन को साने में भी मदद मिलती है।

मोटिवेशनल वीडियो देखने की वजह: जिंदगी में मौजूद किसी भी समस्या से पार पाने, अपने लक्ष्य तक जाने या मन को शांत सहज रखने के लिए मोटिवेशनल वीडियो खूब देखे जा रहे हैं। जबकि असल जीवन में प्रेरणादायी बातों से मन-स्थिति बदलने की प्रतिबद्धता नहीं दिखती। बावजूद इसके सोशल मीडिया प्रेरक सामग्री से अटा पड़ा है। असल में इसके पीछे आनंद के सिद्धांत और डोपामाइन हार्मोन को बढ़ाने की प्रणाली एक अहम कारण है। ऐसा कंटेंट देखने से व्यक्ति को त्वरित संतुष्टि और एक भावनात्मक सहारा मिलता है।

अमल करना सबसे जरूरी: निःसंदेह, जीवन से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने और लक्ष्यों को पाने के लिए आगे बढ़ने हेतु सही कार्य योजना जरूरी है। वचुअल स्क्रीन में झांके रहने के बजाय वास्तविक जीवन में नियमित समय और ऊर्जा लगाकर ही अपने आप में बदलाव लाया जा सकता है। आध्यात्मिक उन्नति की जा सकती है। व्यक्तिगत जीवन के हर पक्ष पर संवर्धन किया जा सकता है।



रोहक

रेल यात्राएं तो आपने भी जरूर की होंगी। लेकिन देश-दुनिया में कुछ रेलगाड़ियां ऐसी हैं, जो हजारों किलोमीटर की यात्रा करती हैं। दुनिया की सबसे लंबी दूरियां तय करने वाली इन रेलगाड़ियों से यात्रा का अनुभव बेहद अनोखा और मजेदार होता है। इनमें से कुछ लंबी रेल यात्राओं पर एक नजर।

सबसे लंबी दूरी तय करने वाली अनोखी-शानदार रेल गाड़ियां

इंडियन पैसिफिक एक्सप्रेस

जैसा कि नाम से ही जाहिर है, यह ट्रेन आपको दुनिया की सबसे यादगार ट्रेन यात्रा के रूप में दो महासागरों को पार करवाती है। सिडनी से पर्थ तक का 4352 किमी. लंबा यह रेल मार्ग आपको अनूठे लोक की यात्रा का अनुभव देता है। विशाल ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप को पार करते हुए आप यहां के दिलकश नजारे देखेंगे तो मानो हिप्नोटाइज हो जाएंगे। कई जगह तो आपको वन्य जीवन की झांकी भी देखने को मिलेगी। इस ट्रेन में यात्रियों के लिए कई क्लास के कोच हैं, जैसे गोल्ड सर्विस के तहत स्लीपर केबिन। आर रेड सर्विस के तहत डे नाइट सीट। स्लीपर केबिन में आप तमाम सुविधाओं से सुसज्जित सिंगल या ट्विन स्लीपर केबिन ले सकते हैं और स्वाइट ऑस्ट्रेलियन भोजन का लुत्फ उठा सकते हैं। जबकि आर रेड सर्विस के तहत डेनाइट सीट दी जाएगी, जिस पर सोने की सुविधा भले ही न हो पर आपको आरामदायक तरीके से बैठने की सुविधा जरूर मिलती है। यहां पर्याप्त लेगस्पेस है, कोहनी टिकाने के लिए आरामदायक हथिये हैं, वीडियो देखने की सुविधा है। इन डिब्बों में भी स्नेक्स, कॉफी, लंच, डिनर सब कुछ उपलब्ध कराया जाता है।

ट्रांस साइबेरियन एक्सप्रेस

दुनिया की सबसे लंबी दूरी तय करने वाली यात्री ट्रेन है, ट्रांस साइबेरियन एक्सप्रेस। मॉस्को से व्लाडीवोस्टोक तक फैली 9288 किमी. की पटरियों पर सस्पेंड दौड़ती यह ट्रेन आपको वाकई एक यादगार यात्रा का अनुभव देती है। 77 किमी. प्रतिघंटे की रफ्तार से दौड़ने वाली इस ट्रेन में बिताए करीब 146 घंटे (करीब 6 दिन) आप शायद ही अपनी जिंदगी में कभी भुला पाएं, क्योंकि इन 6 दिनों में आप कभी पहाड़ों के बीच से गुजरेंगे, तो कभी हरी घास से भरे मैदानों से, कभी यह ट्रेन आपको रेगिस्तान के दृश्य दिखाएगी, तो कभी हरे भरे विषाजल जंगल के बीच से ले जाएगी।



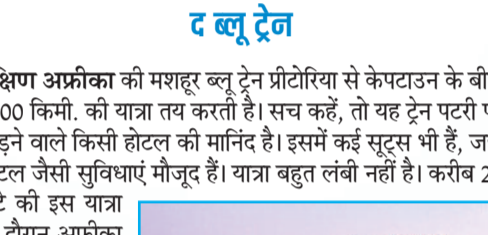
ड्रिगु हाइ स्पीड रेल

आज की तारीख में अगर लंबी दूरी तय करने वाली सबसे तीव्र गति वाली यात्री रेलगाड़ी का जिक्र होता है, तो उनमें ड्रिगु हाइ स्पीड रेल सबसे ऊपर है। यह ट्रेन बीजिंग से शंघाई की 1303 किमी. की यात्रा मात्र 5 घंटे में तय कर लेती है। इसकी गति 300 किमी. प्रतिघंटे तक हो सकती है।



भारत की सबसे लंबी रेल यात्रा

भारत की सबसे लंबी रेल यात्रा विवेक एक्सप्रेस तय करती है। यह 9 राज्यों से होकर गुजरती है। यह असम के डिब्रूगढ़ से तमिलनाडु के प्रसिद्ध स्थल कन्याकुमारी तक चलती है। यह रेलमार्ग लगभग 4,273 किलोमीटर लंबा है। इस सफर को तय करने में लगभग 80 घंटे लगते हैं। इस ट्रेन का नाम स्वामी विवेकानंद के नाम पर रखा गया है। अपने इस सफर में यह ट्रेन लगभग 55 स्टेशनों पर रुकती है।



द ब्लू ट्रेन

दक्षिण अफ्रीका की मशहूर ब्लू ट्रेन प्रीटोरिया से केपटाउन के बीच 1600 किमी. की यात्रा तय करती है। सच कहें, तो यह ट्रेन पटरि पर दौड़ने वाले किसी होटल की मानिंद है। इसमें कई सुट्स भी हैं, जहां होटल जैसी सुविधाएं मौजूद हैं। यात्रा बहुत लंबी नहीं है। करीब 27 घंटे की इस यात्रा के दौरान अफ्रीका के तस्वीर सरीखे कुदरती दृश्य आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रेन की गति कोई खास नहीं, मात्र 57 किमी. प्रति घंटे है, क्योंकि इसे होटल रूम सरीखे डिब्बों की जरा नजाकत से ही चलाना पड़ता है और यात्रियों की सुख-सुविधा का खयाल भी रखना पड़ता है।



द कनाडियन ट्रेन

टोरंटो से वैंकुवर की यात्रा करवाने वाली यह ट्रेन जमीन आपकी 83 घंटे तक सैर कराती है। इस दौरान यह ट्रेन आपको कनाडा के विभिन्न मनोहर दृश्यों से भरी 4466 किमी. दूरी का अवलोकन करवाती है। ट्रेन की गति पहाड़ों की चढ़ाई में कभी मंद पड़ जाती है, तो हरे-भरे चित्ताकर्षक जंगलों से गुजरने के दौरान तेज भी हो जाती है। इस ट्रेन में कांच से बनी बड़ी-बड़ी खिड़कियों से तरह-तरह के दृश्यों को देखना वाकई रिलैक्सिंग और पीसफुल एक्सपीरियंस देता है।



चाइना यूरोप ब्लॉक ट्रेन

द चाइना यूरोप ब्लॉक ट्रेन, दुनिया की सबसे लंबी दूरी तय करने वाली ट्रेन है। यह यीबू से मैड्रिड तक की 9977 किमी. की यात्रा करीब 21 दिनों में तय करती है। लेकिन यह कोई यात्री ट्रेन नहीं बल्कि मालगाड़ी है।



शर्ट-जैकेट्स, शर्ट और जैकेट का कॉम्बो होता है। इन दोनों की खूबियां मिलकर शर्ट-जैकेट्स बनाती हैं। इस सीजन में इनका ट्रेंड यंगस्टर्स में काफी बढ़ रहा है।

इन हल्की सर्दियों में युवाओं को भा रहें शर्ट-जैकेट्स

फैशन ट्रेंड

प्रतिभा अरोड़ा

शर्ट-जैकेट्स या जिसे फैशन की भाषा में शैकेट्स भी कहा जाता है, इस साल की हल्की सर्दियों में युवाओं की पहली पसंद बनी हुई है। ना सिर्फ स्टाइल के कारण बल्कि इनके आरामदायक, वर्सटिलिटी और मॉडर्न लुक की वजह से भी ऐसा हुआ है। क्या होती है शर्ट-जैकेट: शर्ट-जैकेट्स, दिखती तो शर्ट जैसी हैं, लेकिन इनका फेब्रिक मोटा होता है और ये हल्की सर्दियों में गर्माहट देकर जैकेट का भी काम करती हैं। इसलिए इन्हें शर्ट-जैकेट्स कहा जाता है। इन्हें पहनने के लिए जरूरी नहीं है कि मौसम बहुत ठंडा ही हो। अगर हल्की हवा चल रही हो तो भी इन्हें आराम से पहना जा सकता है।



इनकी खासियतें: शर्ट-जैकेट्स ट्विन, डेनिम, वूलन फ्लैनेल, कॉटन ब्लेंड या कॉर्डरॉय से बनती हैं। इनकी डिजाइन बेहद आकर्षक होती है, जिनमें आगे बटन, दो या चार पॉकेट और किसी भी खड़ी तो कई में गिरी कॉलर होती हैं यानी दिखने में ये बिल्कुल शर्ट जैसी लगती हैं, लेकिन शर्ट के मुकाबले थोड़ी मोटी होती हैं। हालांकि इनका वजन कड़ाके की सर्दियों में पहनी जाने वाली जैकेट्स के मुकाबले काफी कम होता है। फिर भी ये शर्ट के मुकाबले वजनदार होती हैं। ट्रांजिशन वेडर यानी जब न तो ज्यादा सर्दी होती है और न ज्यादा गर्मी, कहने का मतलब पूरी तरह से बारिश के बाद की गर्माहट का मौसम गया नहीं होता और पूरी तरह से सर्दियां आई नहीं होतीं, इस दौरान इन्हें पहनना सबसे सही लगता है। क्योंकि ऐसे मौसम में जब हल्की ठंड पड़ रही हो, ये बिल्कुल परफेक्ट च्वाइस होती हैं। इन्हें अंदर टी-शर्ट के रूप में भी पहना जा सकता है। कई बार खुले या बंद दोनों तरीकों से इन शर्ट-जैकेट्स को केरी किया जा सकता है। युवाओं को क्यों हैं इतनी पसंद: शर्ट-जैकेट्स युवाओं को बेहद पसंद आती हैं। वास्तव में इन दिनों कपड़ों में लेयरिंग ट्रेंड में है यानी, कई परतों में ड्रेस पहनकर अलग-अलग लुक बनाना। शर्ट-जैकेट्स इस लेयरिंग फिगोमिना की स्टार आइटम है। इसे आराम और स्टाइल के साझे कॉम्बिनेशन के रूप में भी देखा और जाना जाता है। यह न तो पूरी तरह से फॉर्मल है और न ही पूरी तरह से कैजुअल बल्कि इसके

लिए जो शब्द ज्यादा प्रचलित है, वह है-स्मार्ट कैजुअल। इसलिए ये युवाओं को विशेष रूप से पसंद आती हैं, क्योंकि उनकी बांडी में ये एक परफेक्ट बैलेंस बनाती हैं। लेकिन इसकी पॉपुलैरिटी की वजह सिर्फ यही नहीं है, इसे पॉपुलर बनाने में सोशल मीडिया का भी बड़ा हाथ है। वास्तव में इंस्टाग्राम, पिंट्रेस्ट और यूट्यूब पर फैशन इंफ्लुएंसर लगातार इन्हें प्रमोट कर रहे हैं, जिससे युवाओं में इनकी डिमांड काफी बढ़ गई है। सबसे बड़ी बात यह है कि ये शर्ट-जैकेट्स, युवक ही नहीं युवतियों के बीच भी खूब लोकप्रिय हैं, क्योंकि इन्हें दोनों ही बड़े आराम से पहन सकते हैं। ये दोनों की बांडी पर खूब फव्वती हैं। शर्ट-जैकेट्स पहनने का एक फायदा यह भी है कि इसके कारण बहुत कम कपड़ों पर भी एक कंप्लीट आउटफिट तैयार हो जाता है। बस एक बेसिक टी-शर्ट, डेनिम और ये शर्ट-जैकेट्स, बस समाहित पूरा आउटफिट तैयार हो गया।

इस साल है इसका ट्रेंड: इन दिनों यह फैशन या ट्रेंडिंग स्टाइल में इसलिए है, क्योंकि इस साल पुरुषों द्वारा डेनिम और फ्लैनेल चेक शर्ट-जैकेट्स को खासतौर पर पसंद किया जा रहा है। अपने नए लुक, स्मार्ट डिजाइन और कलर कॉम्बिनेशन के कारण ये यंगस्टर्स की पहली पसंद बनी हुई है तो लड़कियों में भी कुछ खास कलर्स की शर्ट-जैकेट्स इस साल खूब फैशन में हैं, जिनमें परपल, टॉन कलर सबसे खास है। साथ ही लड़कियों में इनका ओवरसाइज्ड डिजाइन भी खूब हिट है। चूंकि यह एक यूनिसेक्स फैशन है, इसलिए शर्ट-जैकेट्स को खूब सारे न्यूट्रल कलर्स में भी देखा जाता है जैसे- बेज, ऑलिव, ब्लैक पिंक और ग्रे। कुल मिलाकर शर्ट-जैकेट्स इन दिनों युवाओं के बीच इसलिए भी खूब फैशन में हैं, क्योंकि ये सिर्फ एक ड्रेस भर नहीं हैं बल्कि लाइफस्टाइल का सिंबल बन गए हैं। कम लेयरिंग, ज्यादा स्टाइल और हर मौके पर फिट रहने वाली शर्ट-जैकेट्स आज यंगस्टर्स के बीच पहली पसंद बनी हुई हैं। जहां तक इसके स्टाइल कॉम्बिनेशन की बात है तो शर्ट-जैकेट्स में स्टाइलिश लुक के लिए इसे बेसिक टी-शर्ट या टर्टलनेक के ऊपर पहनते हैं। साथ ही लोअर में डेनिम, चिनी या स्कर्ट पर भी यह बहुत आसानी से मैच कर जाती है। स्कार्फ या कैप के साथ भी इसे केरी करना अटपटा नहीं बल्कि आकर्षक लगता है। जहां तक फुटवेयर की बात है तो स्नीकर्स या लोफर इसके साथ अच्छे लगते हैं।

जिस दौर में कई सुपर स्टार्स बॉलीवुड में एक्टिव थे, उस समय में भी संजीव कुमार ने अपने एक्टिंग टैलेंट से अलग पहचान बनाई। संजीव कुमार की पुण्य तिथि 6 नवंबर पर उनके द्वारा निभाए गए यादगार किरदारों पर एक नजर।

हर रोल निभाने में परफेक्ट वर्सटाइल एक्टर संजीव कुमार

यादें

मनोज प्रकाश

सुपर स्टार का ग्लैमर, हिट कराने का तमगा और स्लिम-टिम फिगर अगर किसी हीरो की इमेज को एक डेकोरम देता है, तो किसी भी भूमिका को परफेक्ट तरीके से करना भी किसी फिल्म को हिट कराने की गारंटी हो सकती है। यह बात सिद्ध की थी संजीव कुमार ने। वह एक ऐसे कलाकार थे, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे कोई रोल निभाते नहीं, उसे पूरी तरह जीते थे। जिस तरह हिंदी फिल्म इंडस्ट्रीज में दिलीप कुमार, अमिताभ



'आंधी' में सुवित्रा सेन के साथ संजीव कुमार

बचन, धर्मेन्द्र, राजेश खन्ना, देवानंद, राजकपूर को बेहतरीन अभिनेता माना जाता है, उसी श्रेणी में संजीव कुमार का नाम भी बड़े सम्मान से लिया जाता है। हर तरह की भूमिकाएं निभाई: 9 जुलाई 1938 को गुजरात प्रांत में जन्मे, संजीव कुमार ने जितनी भी फिल्मों की सभों में उनके डायलॉग से अधिक उनकी आंखें और मुस्कराहट ने अभिनय किया। संजीव कुमार हिंदी फिल्मों के ऐसे अभिनेता थे, जिन्होंने हर तरह की भूमिकाएं कीं। यहां तक कि उन्होंने एक ही फिल्म में एक साथ नौ भूमिकाएं निभाकर एक ऐसा कमाल किया, जो 'भूते न भविष्यति' है। उनके किरदार ऐसे हुआ करते थे, जिन्हें भुला पाना संभव ही नहीं है। 'शोले' और 'आंधी' उनकी दो ऐसी फिल्में हैं, जो भारतीय सिनेमा में मील का पत्थर माना जाता है। 'शोले' में ठाकुर का यादगार किरदार: 'शोले' में संजीव कुमार ने पहले जेलर और फिर ठाकुर बलदेव सिंह का रोल बखूबी निभाया। पूरे परिवार को डकैत गब्बर सिंह द्वारा खत्म कर दिए जाने और उनके दोनों हाथ काट दिए जाने के बाद भी ठाकुर बलदेव सिंह ने जिस तरह से अपना

प्रतिशोध लिया, उसने आने वाली फिल्मों के लिए एक मानक बना दिया। हर किरदार में अलग रंग: फिल्म 'आंधी' में संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए होटल मैनेजर जेके का रोल आज भी दर्शक याद करते हैं। उस फिल्म में उन्होंने एक बेबस पति लोकिन समर्पित प्रेमी के रोल में अभिनय की पराकाष्ठा को छुआ था। जहां तक उनके अभिनय में मौजूद वर्सटिलिटी की बात है तो 'खिलौना' में बिजय, 'अनामिका' में देवेंद्र, 'सच्चाई' में किशोर, 'बचपन' में काशीराम, 'नमकीन' में गेरुलाल, 'राजा और रंक' में विजय और सुधीर, 'कोशिश' में हरिचरण, 'अंगूर' में अशोक और 'वक्त की दीवार' में विक्रम के किरदार ऐसे हैं, जिनसे उनकी प्रतिभा का लोहा सभी ने माना। 'उलझन' में उन्होंने सुलक्षणा पंडित के साथ एक ईमानदार अफसर और पति के रूप में फंसे व्यक्ति के द्रढ़ को बेहतरीन तरीके से निभाया। फिल्म 'नया दिन नई रात' में नौ किरदार निभाना और सभी को उसकी धारा में बहाते ले जाना, संजीव कुमार के बस की ही बात थी। उनसे पहले और उनके बाद आज तक किसी ने नौ रोल नहीं निभाए हैं। ये भी रहे यादगार किरदार: संजीव कुमार को फिल्म 'दस्तक' के लिए हार्मिद का गंभीर किरदार निभाने हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया था। इसके उलट 'पति, पत्नी और वो' में तो उन्होंने हंसा-हंसाकर लोगों को लोटपोट कर दिया था। पत्नी की बीमारी की आड़ में सेकेट्री से प्रेम राग आलापना और पत्नी को समझाना, उस दौर में एक ऐसी कहावत बन गया था कि लोग रियल लाइफ में ऐसे किसी मामले में आपस में एक-



गटा के संभ-संग', 'अनामिका' का 'मेरी भीगी सी पलकों पे', 'आंधी' का 'तुम आ गए हो, नूर आ गया है', 'मौसम' का 'दिल ढूँढता है फिर वहीं फुसंत के रात-दिन' और 'सिलसिला' का 'रंग बरसे', हर दौर के हिट गानों की श्रेणी में गिने जाते हैं। अधूरी रही प्रेम की दास्तान: संजीव कुमार ने जिस तरह से फिल्मों में अपना परचम लहराया, उसी तरह से उनके प्रेम के चर्चे भी खूब सुने जाते रहे। हेमा मालिनी के साथ के किस्से तो सर्वाधिक चर्चित रहे ही हैं। सुलक्षणा पंडित के साथ भी उनकी जोड़ी चर्चित रही पर वह भी अपने मुकाम पर पहुंचने से रह गईं। खुद के बारे में भी कई अपनी ही भविष्यवाणी को सच साबित करते हुए जीवन के पचास बसंत पूर्ण करने से पहले ही 6 नवंबर 1985 को अनंत आकाश में हमेशा-हमेशा के लिए विलीन हो गए।



दूसरे को कह देते थे-संजीव कुमार बन रहे हो? संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए यादगार किरदारों में 'मौसम' के डॉक्टर अमरनाथ को कैसे भूला जा सकता है? इस फिल्म में उनका डबल रोल, शर्मिला टैगोर के रोल से किसी तरह से कमतर नहीं रहा। इसी तरह फिल्म 'त्रिशूल' तो अमिताभ की कही जाती है, लेकिन इसमें संजीव कुमार ने एक ऐसे व्यापारी का रोल प्ले किया, जो अंजाने में ही अपने बेटे से व्यापारिक संघर्ष कर रहा होता है और उसे पता ही नहीं चलता। इसमें पिता-पुत्र के संवाद, दो प्रतिद्वंद्वी व्यापारियों की उस लड़ाई का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें वे अपनी जीत के लिए किसी भी स्तर तक जा सकते हैं। उन पर फिल्माए गाने भी हुए हिट: संजीव कुमार पर फिल्माए गाने भी सुपरहिट रहे। 'अनोखी रात' का गीत 'ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में', 'खिलौना' का 'खिलौना जानकर तुम तो', 'सीता और गीता' का 'हवा के साथ-साथ, 'अनामिका' का 'मेरी भीगी सी पलकों पे', 'आंधी' का 'तुम आ गए हो, नूर आ गया है', 'मौसम' का 'दिल ढूँढता है फिर वहीं फुसंत के रात-दिन' और 'सिलसिला' का 'रंग बरसे', हर दौर के हिट गानों की श्रेणी में गिने जाते हैं। अधूरी रही प्रेम की दास्तान: संजीव कुमार ने जिस तरह से फिल्मों में अपना परचम लहराया, उसी तरह से उनके प्रेम के चर्चे भी खूब सुने जाते रहे। हेमा मालिनी के साथ के किस्से तो सर्वाधिक चर्चित रहे ही हैं। सुलक्षणा पंडित के साथ भी उनकी जोड़ी चर्चित रही पर वह भी अपने मुकाम पर पहुंचने से रह गईं। खुद के बारे में भी कई अपनी ही भविष्यवाणी को सच साबित करते हुए जीवन के पचास बसंत पूर्ण करने से पहले ही 6 नवंबर 1985 को अनंत आकाश में हमेशा-हमेशा के लिए विलीन हो गए।



'त्रिशूल' में अमिताभ के पिता के किरदार में संजीव कुमार